कौड़ियों में राज्य
सुर सुन्दरी कथा

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

आशीर्वाद एवं संपादन

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पुस्तक का नाम	:	**कौड़ियों में राज्य (सुर सुंदरी कथा)**
आशीर्वाद	:	**गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव** **वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव**
आशीर्वाद एवं सम्पादन	:	**आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव**
रचयित्री	:	**आर्यिका आस्थाश्री माताजी**
सहयोग	:	**मुनि श्री विमलगुप्तजी, मुनि श्री विनयगुप्तजी** **क्षुल्लक श्री धर्मगुप्तजी, क्षुल्लक श्री शांतिगुप्तजी** **क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी, क्षुल्लिका तीर्थश्री** **ब्र. केशरबाई**
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	**रचनाकाराधीन**
प्रतियाँ	:	**1000**
संस्करण	:	**द्वितीय, वर्ष-22020**
प्रकाशक	:	**श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, धर्मतीर्थ क्षेत्र कचनेर के पास,** **औरंगाबाद (महाराष्ट्र)** Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान		1. **प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ** 2. **श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332** 3. **श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288** 4. **श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770** 5. **श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922** 6. **श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687**
मुद्रक	:	**राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर** Mob. 9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	रचनाकार	पेज नं.
1.	आशीर्वाद	ग.ग. कुन्थुसागरजी	4
2.	गुण स्मरण	वैज्ञानिक आचार्य कनकनन्दी जी	4
3.	चारित्र ही धर्म है।	आचार्य गुप्तिनंदी जी	5
4.	प्रस्तावना – नारी शक्ति	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	6
5.	कौड़ियों में राज्य (सुर सुन्दरी कथा) प्रारम्भ		9

आशीर्वाद

प्रसन्नता इस बात की है कि **आर्यिकाश्री आस्थाश्री माताजी** द्वारा कौड़ियों में राज्य (सुर सुन्दरी कथा) की रचना की गई है। सतियों की पुस्तक पढ़ने से महापुण्य बंधता है, कर्मों की निर्जरा होती है, माताजी ने यह कार्य बहुत ही अच्छा किया है। आज की बालिका वर्ग इसको अवश्य पढ़ें। माताजी आगे और भी इसी तरह रचना करती रहें, आपका क्षयोपशम ज्ञान बढ़ता रहे, ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

– ग.ग. आचार्य कुन्थुसागर

गुण स्मरण

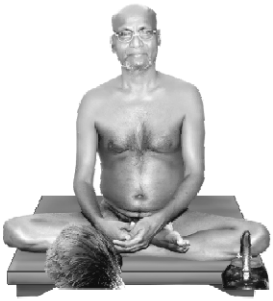

मम प्रिय शिष्या **आर्यिका 'आस्थाश्री'** ने स्व–पर–विश्वकल्याणार्थे विभिन्न विधानों एवं कथाओं की रचनायें की हैं। एतद्र्थ आस्थाश्री को मेरा मंगलमय शुभाशीर्वाद। पूजा के द्वारा पूजक पूज्य के गुरु–स्मरण–कीर्तन–अनुकरण से आध्यात्मिक विकास करें कथाओं से अपने जीवन को आदर्शमय बनायें। ऐसी शुभ भावनाओं के साथ–

–आचार्य कनकनन्दी

चारित्र ही धर्म है।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने चारित्र को ही धर्म कहा है। चारित्र भी दो प्रकार का होता है– (1) सकल चारित्र (2) देश चारित्र इसे महाव्रत व अणुव्रत भी कहते हैं। महाव्रतों का पालन मुनिराज व आर्यिका करते हैं एवं अणुव्रतों का पालन सामान्य श्रावक व श्राविका करते हैं। अणुव्रत भी सामान्य नहीं होते हैं। जो दृढ़ता से अणुव्रतों का पालन करते हैं उनकी देवता भी पूजा करते हैं। जैन संस्कृति में अणुव्रतों का पालन करने वाली स्त्री को 'सती' कहते हैं। वर्तमान जैन इतिहास में अनेक सतियाँ हो चुकी हैं। उन्हीं में से एक सती 'सुर–सुन्दरी' है। ये सतियों में विलक्षण सती थी। जिसने पति के आदेश का दृढ़ता से पालन किया। अनेक आपदाओं को सहन करते हुए। उन पर विजय पाते हुए 'सात कौड़ियों में राज्य प्राप्त करके' दिखाया। अंत में आर्यिका दीक्षा लेकर सोलहवाँ स्वर्ग प्राप्त किया। सुर सुन्दरी की कथा बहुत ही मार्मिक कथा है। इसे **'आर्यिका आस्था श्री माताजी'** ने बहुत ही रोचक ढंग से लिखा है।

कथा साहित्य का ये माताजी का 5 वाँ पुष्प है। आज की लड़कियों, स्त्रियों के लिए यह बहुत ही प्रेरक चारित्र कथा है। आप सभी इसे पढ़ें और अपने शील में दृढ़ हो – यही इस ग्रन्थ लेखन का उद्देश्य है। इस पुनीत कार्य के लिए ग्रन्थ लेखिका माताजी को आशीर्वाद – उन्हें अगले भव में केवज्ञान की प्राप्ति हो, यही उनके लिए विशेष शुभकामना, शुभाशीर्वाद है। ग्रन्थ के पुण्यार्जक, मुद्रक, प्रकाशक, पाठक सभी को हमारा शुभाशीर्वाद।

– आचार्य गुप्तिनंदी

प्रस्तावना – नारी शक्ति

दोहा– **नारी से नारी हुई, नारी से नर होय।**
तीर्थंकर चक्री मुनि, ये नारी सुत होय॥
सात कौड़ियों में मिला, राज पाठ का ताज।
सुर सुन्दरी सती कथा, पढ़ो सुनो भवि आज॥

इस धरती पर अनेक महापुरुष संत मनीषी तीर्थंकर चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण, राजा, महाराजा आदि हुये हैं। सबने अपने–अपने कार्यकाल में प्रजा के लिये नित नये कार्य किये और अंत में मुनि बन कर कठोर साधना करके मोक्ष या स्वर्ग को प्राप्त हुये।

अनेक पुराणों में हमारे आचार्यों ने नारियों का वर्णन किया है। ऐसे तो संसार में अनन्त जीव आते हैं और चले जाते हैं, पर याद उन्हीं को किया जाता है जो अपने जीवन में कुछ विशेष करते है। हम ऐसे लोगों को अपनी उँगुली पर गिन सकते हैं। उसी श्रृंखला में कई नारियाँ हैं, कई महापुरुष हैं।

नारियों में ऐसी अनेक राजकन्यायें हैं जिनका नाम हम गौरव से लेते हैं। हमें उनका नाम लेने में गौरव होता है। सर्वप्रथम हमारे लिये आदर्श बनी हमारे प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान की पुत्रियाँ ब्राह्मी और सुन्दरी जिन्होंने प्रथम आर्यिका दीक्षा लेकर नारियों के लिये मोक्ष मार्ग प्रशस्त बनाया।

सुख–दुःख में पति का साथ देने वाली महासती सीता । राम ने अपवाद के कारण सीता का त्याग कर दिया परन्तु सीता ने राम के लिये एक ही संदेश भेजा। हे राम ! आपने लोगों के कहने में आकर जैसे मुझे छोड़ दिया है। वैसे ही लोगों के कारण आप कभी अपने जैन धर्म को मत छोड़ना। भाग्य को बलवान बताने वाली महासती मैना सुन्दरी का पिता ने कोढ़ी पति के साथ विवाह कर दिया था। उसका धर्म पुरुषार्थ काम आया सिद्धचक्र विधान और गंधोदक से कोढ़ी पति भी कामदेव के समान सुन्दर बन गया।

गजमोती चढ़ाने के कारण मनोवती के पति बुद्धसेन को घर से निकाल दिया

गया परन्तु सती मनोवती की भक्ति रंग लाई। दो बार उपवास किये। ससुराल में जाते ही तीन उपवास और घर से निकलने के बाद 7 उपवास के बाद गज मोती चढ़ाकर ही दर्शन किया उसने अपने नियम को नहीं तोड़ा– अंततोगत्वा प्रतिज्ञा में सफल हुई। भोजन किया। कैकेई रानी राजा दशरथ के युद्ध में सारथी बनी थी ऐसी और भी अनेक नारियाँ हुई हैं।

इन सबमें सुर–सुन्दरी का नाम भी गौरव से लिया जाता है। बचपन में 7 कौड़ियाँ इसके पल्ले में बंधी थी। ये बालिका खेलती–खेलती सो गई और इसके पल्ले से इसके मित्रों ने कौड़ियाँ खोलकर बेच दी, उन पैसों से मिठाई खरीद कर लाये और सबने मिलकर खाली। सुर सुन्दरी के हिस्से की मिठाई उसके पास में रख दी।

उसको उठते ही अमरकुमार ने कहा– तुम्हारे लिये मिठाई रखी है, खालो। उसने पूछा कि आज मिठाई कौन लाया?

अमरकुमार ने कहा– आज की मिठाई तुम्हारी तरफ से आई है। उसने कहा– मैंने तो नहीं मँगाई।

आपस में दोनों का विवाद हो गया, तुम चोर हो। तुमने मुझसे बिना पूछे मेरी कौड़िया क्यों खोली ? उनको क्यों बेचा ? तुम्हें पता नहीं मैं इन कौड़ियों से तो राज्य प्राप्त कर सकती थी।

योग संयोग से उन दोनों का विवाह हो जाता है। कुछ समय बाद अमरकुमार सुर सुन्दरी के साथ व्यापार के लिये बाहर जाता है। दोनों एक बगीचे में पुरानी बातें कर रहे थे। अमरकुमार को पुरानी बातों से मन में गुस्सा आ गया।

सुर–सुन्दरी बात करती–करती सो गई। अमरकुमार उसके पल्ले में सात कौड़ियाँ और एक पत्र बाँधकर चला गया।

वह जब सोकर उठती है, रोती हुई पल्ले से आँसू पोंछती है तो कौड़ियाँ और पत्र खोलकर पढ़ती है। वह राजा की पुत्री थी, उसका क्षत्रिय धर्म जाग जाता है। अनेक कष्टों का सामना करती हुई आखिर में वह विमलवाहन बन कर वैनाट द्वीप का राज्य प्राप्त कर लेती है। पति से पुनः 12 वर्षों बाद समागम प्राप्त करती है।

चंपापुर में आकर सांसारिक भोगों को भोगते हुये अंत में दोनों वैरागी बन जाते हैं। दोनों ही दीक्षा ग्रहण करते हैं और अपनी आत्मा का कल्याण करते हैं। नारी जो चाहे वह कर सकती हैं। नारी में वह शक्ति हैं जिसका अनुमान कोई नहीं लगा सकता। नारी शक्ति का रूप है, मुक्ति का रूप है, धरती का रूप है, शारदा का रूप है, ज्ञान का रूप है, भक्ति का रूप है, माता का रूप है, लक्ष्मी का रूप है।

आज की बालिकाओं को सुर-सुन्दरी से शिक्षा लेना चाहिये। आज भी हर क्षेत्र में नारियाँ पुरुषों के बराबर कार्य कर रही है। पर उन्हें अपने शील को बचाते हुये हर कार्य करना चाहिये। यह पुस्तक मैंने श्रीमान् कृष्णलाल जैन के द्वारा रचित सात कौड़ियों में राज्य के आधार पर लिखी है।

यह पुस्तक पौष कृष्णा नवमी, रविवार गजपंथा सिद्धक्षेत्र से लिखना प्रारम्भ की थी। दिनांक 3-1-2016 और मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर विमलनाथ भगवान जन्म और तपकल्याणक तीज, चतुर्थी गुरुवार, 11-2-2016 को पूर्ण हुई।

हमारे संघ के मूलनायक भगवान शांतिनाथ को कोटि-कोटि नमन। 24 तीर्थंकर भगवान को नमोऽस्तु। गणधर परमेष्ठी जिनवाणी माता को नमन। मेरे दीक्षादाता गणाधिपति गणधराचार्य **श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव** को त्रय भक्ति पूर्वक नमोऽस्तु। मेरे दीक्षा, शिक्षादाता वैज्ञानिक **धर्माचार्य आचार्यरत्न श्री कनकनन्दी जी** गुरुदेव को नमोऽस्तु।

प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य कविहृदय आर्षमार्ग संरक्षक मेरे ज्ञानदाता इस ग्रन्थ के सम्पादक **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव** को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु-नमोऽस्तु..। सभी मुनिराजों को नमोऽस्तु, पंच परमेष्ठी को नमन वंदन।

सभी भक्त गण विनयपूर्वक गुणग्राही बनकर इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। इसमें मेरे द्वारा कुछ भी त्रुटि हुई हो तो विद्वतगण क्षमा करें। जितनी जानकारी मुझे थी उतना ही मैंने लिखने का प्रयास किया है।

इस पुस्तक के प्रकाशक, मुद्रक, पाठकगण सभी को मंगलमय आशीर्वाद।

-आर्यिका आस्थाश्री

कौड़ियों में राज्य (सुर सुंदरी कथा)

भारत भूमि पर अनेक ऐसी–ऐसी नारियाँ हुई हैं जिनका जीवन चारित्र हमारे अन्दर एक नई चेतना शक्ति को उत्पन्न कर देता है। इन्होंने अपने आदर्शमय जीवन के उज्ज्वल चारित्र से अपना नाम इतिहास में अजर–अमर कर दिया है। व्यक्ति अपना नाम संसार में बड़े संघर्ष करने के बाद ही प्राप्त कर पाता है। जिन–जिन महापुरुषों का नाम हमारे आचार्यों ने ग्रंथों में बताया है। उन्होंने कितने कष्टों का सामना किया, सुख–दुःख के बहुत उतार–चढ़ाव को उन्होंने देखा है लेकिन जो जितना सहन करता है वह उतना ही ऊपर उठता है। सम्मान को प्राप्त करता है। नाम तो व्यक्ति पाप करके, दुष्चरित्री बनके भी कमा सकता है। लेकिन ऐसे व्यक्ति के दुर्गुणों से कोई साधु शिक्षा लेने के लिये उपदेश नहीं देते। परन्तु सज्जन व्यक्ति के सद्गुणों का स्वयं साधु भी बखान करते हैं, शिक्षा देते हैं। आपको उनके समान बनना चाहिये। सज्जन व्यक्ति गुणी व्यक्ति अमीर या गरीब हो उससे कोई मतलब नहीं है। उसके वैभव की बात कोई आचार्य नहीं करते हैं, परन्तु उसके गुण की बात अवश्य लिखकर गये हैं। गुणवानों से गुण ग्रहण करने की भावना रखना, अवगुण ग्रहण नहीं करना चाहिये। जितने भी निर्गुणी दुष्प्रवृत्ति वाले व्यक्ति हुये हैं। उनके अवगुण ग्रहण करने की बात आज तक किसी भी गुरु ने नहीं कही। गुरु तो क्या स्वयं माता–पिता भी उसके समान बनने के लिये नहीं कहते हैं। जैसे– कंस, दुशासन, दुर्योधन, रावण आदि के समान बनने के लिये नहीं कहते हैं। परन्तु राम, महावीर, पारस आदि बनने के लिये सब कहते हैं।

इसी प्रकार किसी घर में जब लक्ष्मी जन्म लेती है तब माता–पिता उसे संस्कारवान बनाना चाहते हैं। लक्ष्मी की तरह ही वह अपने जीवन को प्रकाशित करती है।

कन्या मंगल होती है। हर मंगल कार्य में पहले कन्या की आवश्यकता होती है। चाहे वह कार्य धार्मिक हो या सामाजिक, सबसे पहले कन्या अपने मस्तक पर मंगल कलश व मंगल परिधान धारण करके आगे चलती है, प्रवेश करती है। तभी वह कार्य निर्विघ्न पूर्ण होता है। भगवान के गर्भकल्याणक में भी जिनमाता की सेवा करने सर्वप्रथम अष्टकुमारी देवियाँ आती है।

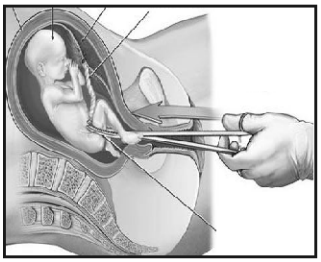

बेटी को मत मारो

आज हमारे घर में कन्या जन्म लेती है तो कुछ माता–पिता उसे इस धरती पर ही नहीं आने देते हैं। जन्म से पूर्व ही डॉक्टर से मिलकर उन्हें पैसे खिलाकर आने वाली राजकुमारी नन्हीं सी कली को खिलने के पहले ही मार देते हैं।

वो माता–पिता कितने निर्दय है। जो माँ होती है वह एक देवी का रूप होती है। वात्सल्य की प्रतिमा होती है। ममता की मूरत होती है। उस माँ की ममता अपनी संतान को कोख में मारते समय मर जाती है। ऐसी निर्दय, निष्ठुर, स्त्री के तो कभी संतान नहीं होना चाहिये। जो स्त्री इस तरह अपनी संतान को मारती है। वह अगले भव में माँ शब्द सुनने को तरस जाती है। वो केवल एक स्त्री बनकर रह जाती है। फिर वो कितना ही प्रयास करती है तो भी उसके कोई संतान नहीं होती है।

गर्भपात करवाने वाले के यहाँ हमेशा सूतक रहता है, स्वप्न में वह बच्चा दिखाई देता है। माता को हमेशा डर लगता है। कभी–कभी एक बार गर्भपात करवाते हैं तो बाद में भी उस घर में किसी लड़के का जन्म नहीं होता है। नारी ही नारी की शत्रु होती है। आज कन्यायें बहुत कम हो गई हैं। एक लड़का हो गया तो बस, वह बालक जब युवक बनेगा और लड़कियाँ नहीं होगी तब उसके लिये दुल्हन कहाँ से आयेगी।

ऐसे में फिर अपनी समाज को छोड़कर अन्य समाज की लड़की से पैसा देकर विवाह किया जाता। बड़े घरों में ऐसे काम अधिक होते हैं। उस परिवार को धर्म करने का भी अधिकार नहीं है। जो माता–पिता खुशी–खुशी गर्भपात करवाते हैं और उनके परिवार के लोग कृतकारित, अनुमोदना से सहभागी बनते हैं उनको कभी पूजा, विधान, अभिषेक, आहारदान और पंचकल्याणक आदि में इन्द्र बनने और धार्मिक कार्य करने का अधिकार नहीं होता है।

लोग कहते हैं– समाज पैसे वाले को कुछ नहीं कहती है सब चुपचाप देखते रहते हैं। ऐसे लोग अपने पाप को छुपाने के लिये अधिक धरम के क्षेत्र में आगे–आगे बढ़ते हैं। संसार में संसारी जीव आपस की रिश्तेदारी निभाते हैं। परन्तु कर्म किसी से रिश्तेदारी नहीं निभाता है। वह किसी को नहीं छोड़ता है।

जब–जब पंचकल्याणक या मुनि आर्यिका दीक्षा होती है तब हजारों की संख्या में भक्त वहाँ मौजूद रहते हैं परन्तु सुवर्ण सौभाग्यवती की जब आवश्यकता होती है तब गिनी–चुनी 8–10 महिलाएँ भी मुश्किल से मिलती हैं। जिस बालिका को जन्म से पहले ही मार दिया पता नहीं वह बड़ी होकर क्या बनती? अपने माता–पिता का नाम रोशन करती, अपना कल्याण करती। देश राष्ट्र की सेवा करती। हमारे आचार्यों ने ऐसी–ऐसी नारियों का वर्णन ग्रंथों में किया जिन्होंने अपने कार्य से अपने आचरण से अपनी एक अलग पहचान बना डाली। सती सीता, अंजना, चंदना, द्रौपदी, सोमा, मनोरमा, मनोवती, राजुल, अनंतमती, ब्राह्मी, सुन्दरी, रेवती, मैना सुन्दरी, विजया सुन्दरी, चेलना, सती सुलोचना, रयण मंजूषा इन सब सतियों ने ऐतिहासिक कार्य किया और अपने शील की पताका फहराई। ये सब सतियाँ चौथे काल में हुई व अपने सतीत्व के प्रभाव से समय–समय पर देवों के द्वारा पूज्यता को प्राप्त हुई। इन सबका वर्णन किसी न किसी ग्रन्थ में अवश्य मिलता है।

जीवन में कितनी भी विषमता आये परन्तु कभी भी अपनी समता को नहीं छोड़ना चाहिये। उन सतियों ने समता से आपदाओं को सहन किया। अपने कर्मों का चिंतवन किया, कभी किसी जीव पर क्रोध नहीं किया, कभी नाराज नहीं हुई। स्वयं के कर्मों को उखाड़ने का कार्य किया। इसलिये वो सब पूज्य बनी। उत्तम गति को, उच्च देवपद को प्राप्त किया व आगे क्रम से मोक्ष जायेगी। सबने स्त्री पर्याय का छेदन कर लिया।

उनके माता–पिता उनको जन्म देकर धन्य हो गये। हम यह कह देते हैं कि वो चतुर्थ काल की वीरांगनायें थी। आज का युग बड़ा ही विपरीत है। इस पंचम काल में भी अनेक महान नारियाँ हुई हैं। जिन्होंने हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है। जिस देश में अपने देश को भी माता के नाम से सम्बोधित किया जाता है। वह देश किसी माता को कैसे मार सकता है। पर मारने वाली तो स्वयं माता है। इन माताओं को ममता का गला नहीं घोंटना चाहिये। उस जन्म लेने वाली कन्या को ऐसे संस्कार देना चाहिये कि वह भी झाँसी की रानी बन सके, देश की सेवा कर सके, धर्म की महती प्रभावना करें। जैसे उसकी योग्यता हो, वैसा वह कार्य करें।

आज हम सतियों का नाम बड़े गौरव के साथ लेते हैं। हो सकता है जिस बेटी को हमने मार दिया था कहीं वो भी उनके जैसी तो बनने वाली नहीं थी। हर जीव परमात्मा बन सकता है, मनुष्य गति से ही वह परमात्मा का पद पा सकता है। अन्य गति में केवल कर्म का फल भोगता है। साकार रूप इस मनुष्य गति में मिलता है। एक जीव की हत्या यानि की परमात्मा की हत्या, एक मुनिराज की हत्या, एक आर्यिका की हत्या, एक सैनिक की हत्या। ऐसे घृणित पाप कोई भी माता–पिता ना करें। जब आपकी बेटी भी अच्छा काम करेगी, तब आपका सीना चौड़ा हो जायेगा। तब आप खुशी में फुले नहीं समायेंगे। उसके माता–पिता बनने का गौरव महसूस करेंगे।

घर–घर जाकर मिठाई बाँटेंगे, आप यह अनुभव करेंगे कि आज मैं किसी संस्कारवान बेटी का पिता हूँ। मुझे मेरी बेटी पर गर्व है।

इस युग की बेटियाँ भी पहले जैसे कार्य करने में सक्षम है। उन्हें कम नहीं समझना चाहिये। आज बेटा और बेटी में कोई भेद नहीं है। सबको समान अधिकार है। फिर घर में समान अधिकार क्यों नहीं है। हर क्षेत्र में अच्छे काम करने में सबको समान अधिकार प्राप्त होना चाहिये। बेटियाँ जब जिद पर अड़ जाती हैं या कुछ ठान लेती हैं तो फिर उसे पूरा करके रहती हैं।

जिस कथा को मैं यहाँ लिखने जा रही हूँ। वह भी एक किसी पिता की प्यारी राजदुलारी बेटी ही थी, वो ही इस कथा की नायिका है। उसका बड़ा ही प्यारा नाम था, महासती सुर सुन्दरी, जी हाँ ये ही उसका नाम था। सुर और सुन्दरी, जिसकी वाणी में सुर भी है और उन सुरों में सुन्दरता के साथ दृढ़ता भी है उसने जो अपने सुर से बोला वह करके दिखाया। इतनी सतियों में एक ये ही ऐसी सती हुई है जिसने अपनी अलग ही पहचान बनाई है। उस युग में सती हुई है और इस युग में झाँसी की रानी हुई है। हमारे जैन धर्म में अपनी आस्था रखने वाली, धर्म पर अडिग, अटल रहने वाली महासती **'सुर–सुंदरी'** जिसकी जीवन चर्या हमारे लिये एक आदर्श बनी। जब व्यक्ति दृढ़ता के साथ संकल्पबद्ध हो जाता है तब वह बड़े से बड़ा काम भी बड़ी आसानी से कर लेता है। सहज ही उसकी हर कार्य करने की विशेष शैली बन जाती है। बस मन में विश्वास और करने की लगन होना चाहिये।

अब यहाँ से शुरू होता है, महासती सुर सुन्दरी का जीवन परिचय, इसने क्या किया ? कैसे यह प्रसिद्ध हुई ? कहाँ इसका जन्म हुआ ? कैसे इसने सात कौड़ियों में राज्य प्राप्त किया ? किसके साथ इसका विवाह हुआ ? आदि–आदि जानने और पढ़ने के लिये तैयार हो जाइये। व्यक्ति को संघर्ष ही ऊँचा उठाता हैं।

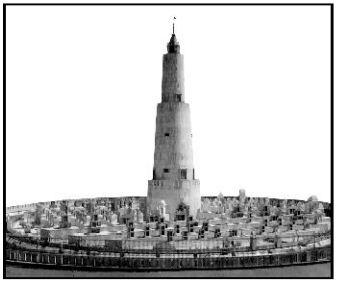

जम्बूद्वीप

इस जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में एक लाख 40 योजन का सुमेरु पर्वत है। जम्बूद्वीप का विस्तार एक लाख योजन है। यह जम्बूद्वीप थाली के समान गोल है। इस जम्बूद्वीप में 7 क्षेत्र और 6 कुलाचल पर्वत है। प्रथम क्षेत्र का नाम भरत क्षेत्र है।

यह भरत क्षेत्र अद्भुत सुन्दरता से युक्त है। कहीं पर्वत है तो कही नदियाँ कलकल करती हुई बह रही हैं। हरियाली से परिपूर्ण शस्य श्यामल दिखने वाला भारत देश अनुपम पर्वत मालाओं से घिरा हुआ है। इस भारत भूमि पर अनेक ऋषि मुनियों ने जन्म लिया है। 24 तीर्थंकरों की जन्म भूमि से यह परम पवित्र हुआ है। यहाँ की रजकण वंदनीय है। क्योंकि कहीं पर भगवान ने जन्म लिया है तो कहीं पर निर्वाण। इस तरह इस धरती पर ही एक-एक भगवान के पाँच-पाँच कल्याणक हुये हैं। प्रभु ने केवलज्ञान होने के बाद पूरे भारत में विहार किया है। ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ पर भगवान का विहार ना हुआ हो, मुनि अवस्था में धरती पर चले और केवलज्ञान होने के बाद धरती से 5000 धनुष ऊपर गमन हुआ है।

इस हुण्डावसर्पिणी काल का प्रभाव है कि हर तीर्थंकर का जन्म अलग-अलग नगरी में हुआ है। नहीं तो सब भगवान का जन्म अयोध्या में ही होता है और मोक्ष सम्मेद शिखर जी में ही होता है। इस काल में कुल 5 तीर्थंकरों का जन्म अयोध्या में हुआ है। शेष तीर्थंकरों का अलग-अलग नगरों में हुआ है। इसी तरह मोक्ष भी अलग-अलग स्थानों से हुआ है।

हमारे तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान ही एक ऐसे हुये हैं जिनके पाँचों कल्याणक एक ही नगर में हुये हैं। जो प्रथम बालयति के नाम से जाने जाते हैं। ऐसे बारहवें तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान हैं।

इनके जन्म स्थान का नाम चंपानगर है। इस चंपा नगरी में प्रभु का बचपन बीता हर गली–मोहल्ले में प्रभु ने अपने देव सखाओं के साथ में बालक्रीड़ायें की, मुनि बनकर तप साधना की, केवलज्ञानी बनकर सबको धर्मोपदेश दिया। कर्म काटकर वहीं से मोक्ष गये। जहाँ देवों के द्वारा रत्नवृष्टि हुई। उस पूज्य धरती को हम भी प्रणाम करते हैं।

वहाँ पर जन्म लेकर मोक्ष जाने वाले भगवान को प्रणाम करते हैं और भी कहीं महापुरुष यहाँ पर हुये उनमें एक महापुरुष हैं कोटीभट श्रीपाल। राजा श्रीपाल ने भी यही चंपापुर में जन्म लिया, राज्य किया, अंत में दीक्षा ली और कर्म काटकर मोक्ष गये। राजा श्रीपाल कोटीभट थे। इनके अन्दर 1 करोड़ सैनिकों की ताकत थी। ये एक साथ में 1 करोड़ सैनिकों को युद्ध में हरा सकते थे। ये कामदेव थे।

प्रथम सर्ग

इस चंपापुर नगर में एक समय **रिपुमर्दन राजा** हुआ। ये प्रजा से पुत्र की भाँति प्रेम करता था। न्यायपूर्वक अपने राज्य का संचालन करता था। राजा रिपुमर्दन अमीर–गरीब के साथ एक समान व्यवहार करता था। अपनी प्रजा पर कभी किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालता था। बिना कारण दंडित नहीं करता था। अपनी प्रजा से अधिक कर (टैक्स) नहीं लेता था। कोई भी इसके पास कुछ लेने आता तो वह खाली नहीं जाता था। इसका अनुकरण करने वाली इन्द्राणी के समान सुन्दरता को धारण करने वाली धर्म में हर समय आगे रहने वाली, राजा के मन को हरने वाली **'रती सुन्दरी'** नाम की रानी थी। रती सुन्दरी जितनी सुन्दर थी उतनी ही गुणवान भी थी। राजा भी रानी के साथ सुखों का अनुभव करते हुये राज्य कर रहा था। इस रानी ने एक कन्या को जन्म दिया। उसका सुन्दर रूप देखकर राजा–रानी ने उसका नाम **सुर सुन्दरी** रखा।

राजा-रानी सुर सुन्दरी को देखते हुए

राजकुमारी के जन्म होने पर राजा ने उसका बड़ा ही धूमधाम से जन्मोत्सव मनाया। याचक जनों को भरपूर दान दिया। राजा रानी दोनों ही दिन–रात अपनी लाड़ली राजकुमारी को देखते रहते थे। राजकुमारी की हँसी महाराज के चेहरे पर कभी उदासी नहीं आने देती थी। महाराज राज्य कार्य से जब भी थककर आते, अपनी राजकुमारी को देखते उसको गोद में उठाकर उसको खिलाते, कभी उसे अपनी पीठ पर बिठाते। सुर सुन्दरी हँसती, हाथ पकड़ती, अपनी हँसी से आनन्द पहुँचाती।

छोटे बच्चे ऐसे ही होते हैं। चाहे वह बच्चा लड़का हो या लड़की। बचपन में हर बच्चा सबको प्यारा लगता है। सबकी लाड़ली राजकुमारी धीरे–धीरे पढ़ने के योग्य हुई। चंपापुर नगर में विद्याध्ययन की व्यवस्था थी जहाँ अमीर–गरीब सभी बच्चे समान रूप से पढ़ते थे। उसी गुरुकुल में सुर सुन्दरी को भी महाराज महारानी ने शिक्षा प्राप्त करने भेजा।

सुर सुन्दरी बड़ी ही समझदार थी, बिना कारण किसी भी बच्चे से झगड़ा नहीं करती थी। पढ़ने में होशियार थी। उस गुरुकुल में लड़के और लड़कियाँ साथ में पढ़ते थे। उनके गुरुजी उन्हें हर विषय का अध्ययन कराते थे।

बसंत ऋतु का सुहाना मौसम सबको ही अच्छा लगता है। उस मौसम की ठण्डी हवा सबको आनन्ददायक लगती है। एक दिन सभी बच्चों को दोपहर के समय थोड़ी देर को छुट्टी मिल गई थी। कोई बच्चे खेल रहे थे, कोई पेड़ के नीचे बैठे हवा का आनंद ले रहे थे।

सुर सुन्दरी को फूल इकट्ठा करना बहुत अच्छा लगता था। वो खेलकर जब थक जाती थी तब फूलों के बगीचे में जाकर बैठ जाती। पूर्ण विकसित (खिले) हुये फूलों को देखकर उनकी सुगन्ध लेती हुई, उनको उठाने लगी, कुछ फूल तोड़े, कुछ फूल जमीने से उठाये। फूलों को चुनते–चुनते वह पेड़ की छाया में लेट गयी और उसे कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला।

उसी समय उसकी क्लास के कुछ बच्चे उसके पास में उसे घेरकर खड़े हो गये। उनके हल्ला करने पर भी सुर सुन्दरी की नींद नहीं खुली। उन सब बच्चों में एक बालक थोड़ा बड़ा था। वह उन सबका मुखिया क्लास मॉनिटर था।

बगीचे में सोई हुई सुन्दरी

वह पढ़ने में बहुत होशियार था। थोड़ा शरारती भी था। जब इन सबने देखा कि सुर सुन्दरी बड़ी गहरी नींद में सो रही है।

जो बालक क्लास का मुखिया (मॉनिटर) था वह नगर सेठ का इकलौता पुत्र अमरकुमार के नाम से जाना पहचाना जाता था।

उस समय सुर–सुन्दरी 10 वर्ष की थी और अमर कुमार 12 वर्ष का था। एक लड़की ने सुर सुन्दरी को उठाने की कोशिश की। उसे हाथ से हिलाने लगी तभी उसकी ओढ़नी के पल्ले पर उसका हाथ लगा और उसने देखा कि इसके पल्ले में कुछ बंधा हुआ है। खोलकर देखना चाहिये। आज सुर सन्दरी क्या बाँधकर लाई है ? धीरे से उस लड़की ने उसके पल्ले की गाँठ खोली। उसने सब बच्चों से कहा– आज तो सुर सुन्दरी अपने पल्ले में कौड़ियाँ बाँधकर लाई है। देखो, इसके पल्ले में 7 कौड़ियाँ बंधी हैं। हम चुपचाप इनको निकाल लेते हैं। सुर सुन्दरी को आज बतायेंगे भी नहीं, ये जब पूछेगी तभी बतायेंगे। सबने एक स्वर में कहा– हाँ–हाँ ऐसा ही करेंगे। उसकी कौड़ियाँ निकाल लो, फिर देखते हैं आज ये कब तक ऐसे ही सोती है। इसे पता चलता है या नहीं। कौतुहल वश सबके कहने पर उसकी सहेली ने उसके पल्ले में बंधी सात कौड़ियाँ निकाल ली।

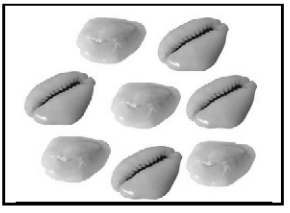

थोड़ी दूर खड़े होकर विचार किया। अब हम इन कौड़ियों का क्या करेंगे। सब सोचों, आज बहुत मजा आयेगा।

वैसे भी बचपन में शरारती बच्चों में दूसरे की वस्तुयें छुपाने की आदत होती है। हँसी–मजाक में दूसरों को रूलाने में किसी को बड़ा आनंद आता है। कोई चिड़ाकर, सामान पुस्तक, पेन, किताब छुपाकर कष्ट पहुँचा कर आनंद मनाते हैं। वे हिंसानंदी नामक रौद्र ध्यान करते हैं। सामने वाला दुःखी होता है पर करने वाला अपनी होशियारी पर हँसता है, झूठ बोलता है, चालाकी करता है। वह बहुत पाप का बंध करता है, उन सब बच्चों ने भी विचार–विमर्श किया इन कौड़ियों का क्या करें। इतने में अमरकुमार की बुद्धि चली, उसने कहा– मैं बताता हूँ, इन कौड़ियों को बेचकर चलो मिठाई लेकर आते हैं। जितनी भी आयेगी आपस में बाँटकर खा लेंगे।

बच्चे वैसे भी मिठाई खाने के शौकीन होते हैं। उन सबने बाजार से उन सात कौड़ियों को देकर मिठाई खरीद कर मँगाली। अमरकुमार ने उनकी क्लास में जितने बच्चे थे, उनको बराबर मिठाई बाँट दी, सबने खाली। सुर सुन्दरी के हिस्से की मिठाई अलग से रख दी। उसके उठने का सभी इंतजार करने लगे। पता नहीं ये कब उठेगी। मिठाई खाकर सब बच्चे वही आराम से खेलने लगे।

जैसे ही सुर–सुन्दरी जागी। अमर कुमार उसके पास दौड़कर आया और उसके हिस्से की मिठाई उसके सामने रख दी। सुर–सुन्दरी से वह बोला– लो ये मिठाई खाओ। फिर पढ़ाई करना।

सुर–सुन्दरी आँखें मलते हुए बोली– आज किसने मिठाई बाँटी हैं। इतने में सब बच्चे उसके पास आकर खड़े हो गये। सबने एक साथ हँसते हुए कहा– तुमने।

वो बोली– मैंने। मैं तो कब से सो रही थी। मैंने कब मिठाई मँगाई। तुम सब क्यों झूठ बोल रहे हो, अमर कुमार की तरफ मुँह करके बोली। सच बताओ अमरकुमार, आज मिठाई किसने मँगवाई है।

अमरकुमार हँसते हुये बोला– सब सच बोल रहे हैं। तुम तो जानती हो मैं कभी झूठ नहीं बोलता, आज मिठाई तुमने ही मँगवाई है। ये तुम्हारी तरफ से ही आई है। सब बच्चे हँसने लगे, तुमने मँगाई, हमने खाई और तुमको ही नहीं पता– हाँ–हाँ।

हँसते हुये बच्चों को देखकर सुर–सुन्दरी को गुस्सा आ गया, वह जोर से बोली– ये क्या हाँ–हाँ कर रहे हो, चुप हो जाओ। मैं ये मिठाई नहीं खाऊँगी।

अमरकुमार हँसी रोककर बोला– अरे राजकुमारी जी, आप नाराज क्यों होती हो ? मैं बताता हूँ, सुनो तुम्हारे पल्ले में जो कौड़ियाँ बँधी थी उनको तुम्हारी सखी ने देखा और पल्ले से बाहर निकाल कर मुझे बताया। मैंने ही उन कौड़ियों को बेचकर ये मिठाई मँगवाई है। इसलिये हम सब बोल रहे थे कि ये मिठाई तुम्हारी तरफ से आई है। अब तो मिठाई खालो।

सुर–सुन्दरी को सुनकर बड़ा दुःख हुआ। इन सबने मेरी कौड़ियाँ खोलकर बेच दी, मिठाई मँगाली। इन लोगों को मैं कभी माफ नहीं करूँगी। वह सब बच्चों पर जोर से चिल्लाई, चोर कहीं के। तुम तो सबसे बड़े चोर हो, बड़े घर का सेठ है, अपने आपको क्या समझता है। बड़ा धन्ना सेठ बनता है। दूसरों की चोरी करना, क्या गुरुजी ने ये ही सिखाया है। अरे मिठाई बाँटने का, इतना ही शौक था तो अपने जेब से पैसे खर्च करके बाँटता, इतनी उदारता ही दिखानी थी तो खुद की तरफ से मँगवाता। तेरे माता–पिता मेरी बात सुनेंगे तो वो भी ये ही कहेंगे कैसा कपूत पैदा हुआ है। गुरुजी की सारी मेहनत पर तूने आज पानी फेर दिया। हम तुझे बड़ा अच्छा समझते थे। आज पता चल गया तू कितना अच्छा है।

अमरकुमार भी सुर–सुन्दरी की बात को थोड़ी देर तो शांति से सुनता रहा। फिर उसकी भी भौंहे चढ़ गईं।

वह भी गुस्से में बोला– ओ राजकुमारीजी, राजा की बेटी होकर 7 कौड़ियों के लिये ऐसी चिल्ला रही हो जैसे हमने तेरी लाखों की दौलत ही लूटली हो ? ये सात कौड़ियाँ तेरे लिये क्या बड़ी चीज है, फिर कभी तेरे को ये कौड़ियाँ नहीं मिलेगी क्या ? आखिर इन कौड़ियों से तू क्या करने वाली है। सुर–सुन्दरी उस पर जोर से गरजी, ये कौड़ियाँ मेरे लिये लाखों की दौलत से भी ज्यादा है। इन कौड़ियों से तो मैं राजा का राज्य प्राप्त कर सकती हूँ।

अमरकुमार बोलने ही वाला था कि गुरुजी आ गये। उसे चुप होना पड़ा, गुरुजी को देखकर सब बच्चे वहाँ से हट गये। चुपचाप क्लास में जाकर बैठ गये। सुर–सुन्दरी ने अपने गुस्से पर जैसे–तैसे काबू किया। वह थोड़ी ही देर में सब कुछ भूलकर पढ़ाई करने में लीन हो गई। एकाग्रता से गुरुजी की बातें सुनने लगी। वह तो पढ़ाई करने में मस्त हो गई। परन्तु अमरकुमार ने सुर–सुन्दरी के शब्दों को हृदय में बिठा लिया। उसने सोचा अवसर मिलते ही इससे अवश्य बदला लूँगा। इसे छोड़ूँगा नहीं, कभी माफ नहीं करूँगा, ये महलों की राजकुमारी होगी, आज हमने मजाक में इसकी कौड़ियाँ ले ली, मिठाई मँगाकर खाली और सारी बात बोलने पर भी इतना चिल्ला रही है। अब मैं भी तुझे देख लूँगा, इसने तो मजाक को ही लड़ाई बना दिया। सारे स्कूल को सर पे उठा लिया है। अपने धनवान होने का बड़ा घमण्ड कर रही है। छोटे दिल की सात कौड़ियों के पीछे सबके सामने मुझे चोर कह रही है। ये क्या राज्य प्राप्त करेगी।

क्लास का समय पूरा हो गया, सब बच्चे अपने–अपने घर चले गये। पढ़ाई इसी तरह चलती रही, समय बीतता गया। बचपन की बातें अधिक समय तक याद नहीं रहती, बातों को विस्मृत कराने में समय बड़ी औषधि है। जब कोई व्यक्ति मर जाता है। बंधु–बांधव पहले दिन बहुत दुःखी होते हैं। दूसरे दिन फिर कम रोते हैं। दिन पर दिन होते हैं और लोग भूलते जाते हैं।

समय सारे घावों को भर देता है। जैसे–जैसे समय निकलता है, याद कम हो जाती है। आँखों में आँसू नहीं आते हैं केवल किसी के सामने मुँह पर जाने वाले का कभी–कभी नाम आता है। अकेले में तो नाम भी याद नहीं आता है।

सब बच्चों की पढ़ाई पूरी हो गई। सुर–सुन्दरी और अमरकुमार दोनों यौवन वय से विभूषित हो गये। दोनों ने हर तरह की शिक्षा को प्राप्त कर लिया।

अमरकुमार भी चंपानगर के सेठ का इकलौता पुत्र था। इसके पिता का नाम धनावह था और माता का नाम धनवती था। धनावह सेठ बड़े ही दानी धर्मात्मा स्वभाव के थे। अमीर या गरीब कोई भी इनके पास मदद लेने आता तो उसे ये कभी खाली नहीं लौटाते थे। कभी किसी को निराश नहीं करते थे। कोई दुःखी प्राणी इनके पास दुःख सुनाने आता तो उसे अपनी ओर से खुश करके ही भेजते थे। सभी गरीब, दुःखी, अनाथ, असहाय लोग इनको बहुत दुआयें देते थे; क्योंकि सेठ धनावह इनको धन देकर संतुष्ट करता थे। जैसा सेठ–सेठानी का नाम था वैसा ही उनका अच्छा काम था।

ऐसे धर्मात्मा परिवार में अमरकुमार का जन्म हुआ। जहाँ माता–पिता अच्छे संस्कार देते हों और गुरु से भी अच्छे संस्कार बालक ग्रहण करते हो, वो बच्चे ही बड़े होकर अपना भविष्य उज्ज्वल बनाते हैं।

द्वितीय सर्ग

एक दिन सुर सुन्दरी अपनी माता रती सुन्दरी के साथ एक आर्यिका माताजी के दर्शन करने गई।

आर्यिका माता के दर्शन करती हुई सुर सुन्दरी

सुर–सुन्दरी ने भक्तिपूर्वक आर्यिका माताजी के दर्शन किये। उन्हें रत्नत्रय की कुशलक्षेम पूछी, आर्यिका माता ने धर्मवृद्धिरस्तु यह मंगल आशीर्वाद दिया।

आर्या ने इसे पढ़ी–लिखी जानकर कुछ प्रश्न पूछे। आर्यिकाश्री ने पूछा– बेटी सम्यक्दर्शन किसे कहते हैं ?

सुर सुन्दरी ने विनयपूर्वक हाथ जोड़कर उत्तर दिया– जीवादि सात तत्त्वों का सच्चा श्रद्धान करना ही सम्यक्दर्शन, इन पर जो सच्ची श्रद्धा करता है वह सम्यक्त्वी है। दूसरा प्रश्न पूछा– जो श्रद्धा नहीं करता है वह सम्यक्त्वी है या नहीं ?

उसने कहा– वो सम्यक्त्वी नहीं, उसे इतना ही ज्ञान नहीं है, मुझे किस पर श्रद्धान करना है, किसको छोड़ना है, किसको ग्रहण करना है। ऐसा जानकर जो श्रद्धा करता है वह सम्यक्त्वी है।

पुनः आर्या ने पूछा– सम्यक्त्व का और कोई लक्षण है। वह बोली– हाँ है। जीवादि तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप पर ज्ञानसहित श्रद्धान करना सम्यक्त्व है। आर्या ने पूछा– यथार्थ स्वरूप क्या है ?

उसने कहा– देव–शास्त्र और वीतरागी गुरु।

आर्यिका ने पूछा– तुम इनका स्वरूप जानती हो ?

सुर सुन्दरी ने कहा– हाँ माताजी, मैं बताती हूँ। जो वीतरागी सर्वज्ञ और हितोपदेशी होते हैं, राग–द्वेष आदि 18 दोषों से रहित होते हैं वो ही हमारे सच्चे देव हैं। जिनका वस्त्र अम्बर है, धरती ही जिनका बिछौना है। जिन्होंने 5 इन्द्रिय और मन को वश में कर लिया, जो आरम्भ परिग्रह से रहित है, ज्ञान, ध्यान, तप में दिन–रात लगे हुये हैं, वो हमारे गुरु हैं।

जिनेन्द्र प्रभु के मुख से जो प्रगट हुई है उनकी वाणी ही जिनवाणी है, जो स्याद्वाद अनेकांत धर्म का उपदेश देती है। अहिंसा का मार्ग बताने वाली हम सबका कल्याण करने वाली प्रभु का पथ दिखाने वाली सच्ची जिनवाणी है। अहिंसा, दया व करुणा वाला हमारा धर्म है।

आर्यिका माताजी सुर–सुन्दरी की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। माताजी ने उसकी माता रती सुन्दरी से कहा– हे रानी ! तुमने एक कन्या रत्न को जन्म दिया है। इसे किसी अच्छे पारखी जौहरी के हाथ में देना। किसी कौए के हाथ मत सौंप देना।

रानी ने हाथ जोड़कर कहा– मेरा रत्न चमकने वाला ही नहीं है। ये बोलने वाला रत्न है। ये तो दूसरों को अपने अनुसार बनाने की कला जानती है। आपका आशीर्वाद होगा तो कौए को भी राजहंस बना लेगी, बस आपका आशीर्वाद चाहिये पुनः आर्यिका माताजी को दोनों ने वंदामी किया और राजमहल में आ गये।

सुर सुन्दरी पूर्ण यौवन वय से सुशोभित हो गई। उसकी सुन्दरता और भी बढ़ गई। वह सर्वांग सुन्दर दिखने लगी। उसकी वाणी में भी परिवर्तन आ गया, वह गंभीर दिखने लगी, बचपन की चंचलता समाप्त हो गयी। उसका अंग–अंग सुन्दर, दिखने लगा, उसके मधुर व्यवहार से सब लोग बड़े प्रसन्न रहते थे। उसकी सखियाँ तो उसे कभी छोड़ती ही नहीं थी। रानी रती सुन्दरी ने महाराज रिपुमर्दन से कहा– अब हमारी राजकुमारी पूर्ण यौवन से युक्त हो गई है।

अब हमें इसका विवाह कर देना चाहिये। महाराज ने कहा– हाँ, इसके विवाह की चिंता तो मुझे भी है। परन्तु इसके योग्य कोई वर मुझे दिखाई नहीं दे रहा है। किसके साथ इसका विवाह करें। आपकी नजरों में कोई हो तो मुझे बताओ ? थोड़ी देर दोनों ही सोचने लगे– हमारी बेटी कौन से राज्य की महारानी बनेगी, इसे ऐसा राजा पति के रूप में मिले जो हमेशा इसे खुश रखे। दोनों ही चुपचाप बैठकर मन में विचार करने लगे, किसके साथ इसका विवाह करें। कोई भी राजकुमार इसके लायक नजर नहीं आ रहा है। राजा–रानी दोनों ही एक–दूसरे का चेहरा देखकर सोच रहे थे।

कभी भी कोई व्यक्ति कुछ बात सोचता है तो वह सबसे पहले आकाश में देखता है और स्त्रियाँ कुछ सोचती है या कुछ बात बोल नहीं पाती है तब अपने पैर के अंगूठे से जमीन कुरेदने लगती है। नीचे की ओर देखती है। यह अधिकतर देखने में आता है।

रानी ने अपना मौन खोला, हाँ महाराज ! एक युवक मेरी नजर में है। आपकी अनुमति हो तो मैं नाम बताती हूँ। राजा ने कहा– बताओ कौनसा युवक है, कहाँ का है, क्या नाम है ? आपने कहाँ– देखा, दिखने में कैसा है?

रानी बोली– स्वामी, आपने तो इतने सारे प्रश्न कर दिये, जिस युवक का नाम मैं बताने जा रही हूँ। उसे आप भी अच्छे से जानते हैं। वह राजकुमार नहीं है और वह कोई दूर देश का भी नहीं है। वह अपने माता–पिता का बडा ही आज्ञाकारी है, वह इसी चंपानगर का मूल निवासी है। उसका नाम अमरकुमार है। वह बचपन में हमारी राजकुमारी के साथ में ही पढ़ा है। दिखने में वह सुन्दर भी है, हम उससे अपनी राजकुमारी का विवाह करते हैं तो हमारी बेटी हमारे सामने रहेगी। हम अपनी बेटी को दूर नहीं भेजेंगे।

महाराज ने आश्चर्य से पूछा– कौन ? वह वणिक पुत्र ? रानी ने कहा– हाँ। क्यों वह राजकुमारी के योग्य नहीं है ?

महाराज ने थोड़ी देर सोचकर जवाब दिया, वो ठहरा व्यापारी, उसमें क्षत्रिय के समान वीरता कहाँ होगी ?

महारानी बोली– अवसर आने पर वीरता भी आ जाती है। वैसे भी उसे लड़ने कहाँ जाना है। आप जैसे महाराज के होते हुए, प्रजा को क्या चिंता है?

राजा ने रानी को समझाया– महारानी जी, आप गलत बोल रही हैं। प्रजा अगर राजा के भरोसे हो जाये, अपनी वीरता छोड़ दे, अपनी बहू–बेटी की रक्षा भी ना कर सके, भोगों में मस्त हो जाये तो ऐसी प्रजा की रक्षा राजा भी नहीं कर सकता। वो प्रजा शीघ्र ही नष्ट हो जाती है, काल के गाल में समा जाती है। चाहे राजा उनके लिये प्राण भी दे दे, परन्तु वह प्रजा को नहीं बचा सकता।

रानी ने कहा– फिर भी महाराज अमरकुमार ऐसा युवक नहीं है। वह हर तरह से अपनी सुर सुन्दरी के योग्य है। हमारी बेटी हमारे नगर में हमारी नजरों के सामने रहेगी। अमरकुमार सुन्दर, सुशील, गुणवान, बुद्धिमान, संस्कारवान है। अपने माता–पिता का इकलौता पुत्र है। आप तो उसके साथ में ही सुर–सुन्दरी का रिश्ता करिये। मैं अपनी बेटी को दूर नहीं भेजना चाहती। हमारी एक ही तो बेटी है। राजा और रंक में क्या भेदभाव करना, वह भी नगर सेठ का पुत्र है। हमारी बेटी वहाँ भी सुखी रहेगी।

महाराज ने कहा– आप सही कह रही है मैं आपकी बात से पूर्ण सहमत हूँ। मैं अभी उसके पिता को सभा में बुलाकर बात करता हूँ। मैं भी अमरकुमार को अच्छे से जानता हूँ। उसको बचपन से देखता आ रहा हूँ। अब मैं चलता हूँ, फिर भी महारानी जी एक बार और सोच लो बाद मैं कुछ बोलना मत, वह सेठ का पुत्र है राजा का नहीं। महारानी बोली– कोई बात नहीं स्वामी, सेठ का पुत्र ही सही, राजा का जवाई तो बन सकता है। हमारी बेटी की किस्मत में होगा तो ये भी रानी बनेगी, सेठानी नहीं। मैं आपको कुछ नहीं बोलूँगी, आप तो अमरकुमार के पिता को बुलवा लीजिये।

महाराज ने एक सैनिक को भेजकर सेठ धनावह को राजदरबार में बुलवाया। सेठ धनावह राजदरबार में उपस्थित हुआ।

महाराज ने सेठ का बहुत आदर–सत्कार किया। बैठने के लिये आसन दिलवाया। महाराज ने अपने मन की बात सेठ से कही। हम अपनी लाड़ली राजकुमारी सुर–सुंदरी का विवाह आपके पुत्र से करना चाहते हैं। धनावह सुनकर अवाक् रह गये, वो तो महाराज को देखते ही रहे, मैं ये क्या सुन रहा हूँ, ये कोई स्वप्न तो नहीं है। अपने आप पर विश्वास भी नहीं हो रहा है। वह टकटकी लगाये राजा को देखने लगा। मैं कहाँ हूँ, कुछ शब्द सेठ के मुँह से नहीं निकले। सेठ को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वो कुछ पल के लिये चेतना शून्य हो गया हो।

महाराज ने मुस्कुरा कर कहा– सेठजी आप मुझे ऐसे क्यों देख रहे हो, हमारा और महारानी का यही निर्णय है, हम अपनी पुत्री का विवाह आपके पुत्र के साथ में करेंगे, मैं सचमुच में सुर सुन्दरी का विवाह अमरकुमार के साथ में करना चाहता हूँ। वह गुणवान है, विद्वान है, बुद्धिमान है। हमारी बेटी के साथ में ही उसने अध्ययन किया है। वह उसके बचपन का मित्र है। वह हर तरह से राजकुमारी के योग्य है।

जब महाराज ने इतनी बात बताई तो धनावह का महाराज पर विश्वास हो गया। उसने दोनों हाथ जोड़े और कहने लगा, मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। कहाँ आप हमारे राजा और कहाँ मैं एक तुच्छ छोटा सा सेठ। महाराज आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। मैं तो ये बात कभी स्वप्न में भी सोच नहीं सकता था कि राजकुमारी मेरे घर की बहु बनेगी, मैं तो धन्य हो गया महाराज। कौन ऐसा मूर्ख होगा जो लक्ष्मी को ठुकरायेगा, वह तो साक्षात् लक्ष्मी है, सरस्वती है। उसको पाकर मेरा परिवार धन्य हो जायेगा। आपने मेरे पुत्र को इस योग्य समझा, यह आपका बड़प्पन है। हमें ये रिश्ता स्वीकार है।

महाराज ने कहा– हम अभी मुहूर्त निकलवा लेते हैं। ज्योतिषी जी भी यहीं है। आइये ज्योतिषी जी इधर आकर बैठिये। अपनी राजकुमारी के विवाह का मुहूर्त निकालिये। ज्योतिषी के बताये शुभ मुहूर्त में राजकुमारी सुर–सुन्दरी का विवाह अमरकुमार के साथ बड़े धूमधाम से कर दिया गया।

सुर सुन्दरी का अमरकुमार के साथ विवाह

रोते हुये महाराज–महारानी ने अपनी बेटी को विदाई दी। महारानी ने अपनी बेटी को गले से लगाया, उसे शिक्षा दी। अपने सास–ससुर का हमेशा सम्मान करना, उनका माता–पिता के समान आदर करना। सबसे मधुर व्यवहार करना, कभी ऊँची आवाज मत निकालना, बड़ों की सेवा और छोटों को प्यार करना। पति की आज्ञा शिरोधार्य करना। सबको प्रसन्न रखना। आज से वो ही तेरा राजमहल है।

सुर–सुन्दरी ने महाराज और महारानी के चरण छुये, उनको प्रणाम किया। अपनी सब सखियों से विदाई ली। सब सखियों ने कहा– सुर–सुन्दरी हमें भूल मत जाना, हमें तेरी जब भी याद आयेगी, हम तुमसे मिलने के लिये आ जायेंगे। हमें तुम्हारी बहुत याद आयेगी। राजकुमारी हमें कभी मत भुलाना।

तृतीय सर्ग

सुर सुन्दरी एक राजमहल से विदा होकर अमरकुमार के महल में आ गई। यहाँ पर नई नवेली बहू को देखने के लिये सभी एकत्रित होकर खड़े थे। अमरकुमार की माता धनवती ने पुत्र और पुत्रवधू की मंगल आरती उतारी, मंगल गीतों की ध्वनि के साथ महल में प्रवेश कराया। समय अपनी गति से बढ़ रहा था, अमरकुमार का जीवन सुर सुन्दरी के आते ही बदल गया। घर का वातावरण नया रूप ले चुका था।

जब भी किसी के घर में नई बहू आती है तो सबके विचारों में और व्यवहार में एक परिवर्तन स्वाभाविक रूप से आ जाता है। नये व्यक्ति के सामने हर व्यक्ति अपने नये रूप में आना चाहता है और नई बहू नये घर में नये लोगों के बीच में अपनी वाणी का प्रभाव दिखाती है। अपने भोलेपन से अपने मधुर व्यवहार से सबको अपनी और आकर्षित करती है। नये–नये रिश्तेदारों से परिचय करती है। हर एक बड़े व्यक्ति के चरण छूती है। उनका आशीष लेती है। कोई कुछ भी बोले परन्तु वह चुपचाप सबकी बातें सुनती रहती है। वह एक बात सोचती है यह अब मेरा घर है। इसे स्वर्ग बनाना मेरा काम है। इसको सजाना–संवारना, देख–रेख करना मेरा काम है। एक दो महीने या अधिक हो तो एक दो साल तक वह अपने सास–ससुर की अच्छी सेवा करती है। समय पर उठती है और हर काम समय पर करती है। सभी की चहेती बन जाती है। सबको प्यार देती है और सबका प्यार पाती है। जब भी बोलती है तो मिश्री की तरह मीठी बोलती है। सुर सुन्दरी ने भी सबको अपना बना लिया। वह सबका ध्यान रखने लगी। सब उससे बहुत खुश रहते थे।

एक दिन सुर सुन्दरी और अमरकुमार छत पर बैठे बात कर रहे थे। उसने अपने स्वामी से पूछा– स्वामी ! ये इतने जहाज कहाँ जा रहे हैं ? वो सब किसके हैं ? अमरकुमार ने कहा– ये सब पिताजी के जहाज हैं ? आज मैं दिनभर से इसमें लगा था। मेरे पिताजी का सारा व्यापार विदेश में होता है वो इन जहाज में सामान रखकर भेजते हैं। कुछ वहाँ ले जाते हैं तो कुछ वहाँ से यहाँ लाते हैं। आज बहुत दिनों बाद ये जहाज विदेश से आये हैं। सुर सुन्दरी जहाजों को देखकर बड़ी खुश हो रही थी। मेरे स्वामी कितनी मेहनत करते हैं और इनके पिताजी तो धन कमाने विदेश में जाते हैं।

अमरकुमार मन में कुछ और ही सोच रहा था। अब मुझे भी कुछ करना चाहिये।

मेरा विवाह भी हो गया, मैं कब तक अपने पिता के द्वारा कमाये गये धन का उपयोग करता रहूँगा। मैं स्वयं तो कुछ कमाता नहीं, फिर मुझे कभी दान धर्म में पैसा देने की इच्छा होगी, तब मैं कहाँ से दूँगा। अब मैं भी विदेश में धन कमाने जाऊँगा, मैं नहीं कमाऊँगा तो मेरी संतान को क्या खिलाऊँगा। आज ही पिताजी से बात करता हूँ।

चलो प्रिये, अब नीचे चलते हैं। पिताजी से कुछ बात करना है। अब अंधेरा भी हो गया है। धनावह सेठ बड़े प्रसन्नचित्त होकर काम कर रहे थे। प्रसन्न होकर काम करने वाला कभी थकता नहीं, प्रत्येक कार्य खुश होकर करना चाहिये। अमरकुमार ने पिता से कहा– पिताजी, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।

सेठजी ने कहा– आओ पुत्र, कहो, सब ठीक तो है।

अमरकुमार ने कहा– हाँ पिताजी, पिताजी मैं भी अब व्यापार करना चाहता हूँ। आप कितना परिश्रम करते हैं। आपको काम करते हुये देखकर मेरी इच्छा भी विदेश जाने की हो रही है। मैं विदेश में जाकर व्यापार करना चाहता हूँ।

धनावह ने कहा– पुत्र यहाँ रहकर भी व्यापार किया जा सकता है और मैंने जो कुछ कमाया है वो सब तुम्हारे लिये ही है। व्यापार करना तो हर पुरुष का कर्त्तव्य है। मैं तुमको व्यापार करने से नहीं रोकता परन्तु यहाँ रहकर भी धन कमाया जा सकता है। तुम हमें छोड़कर चले जाओगे तो हम तो अकेले रह जायेंगे। नहीं बेटा, यहीं पर व्यापार करो।

अमरकुमार ने कहा– मैं जहाज में बैठकर विदेश जाना चाहता हूँ। अपनी बुद्धि का प्रयोग करना चाहता हूँ। मैं अपनी किस्मत को बाहर जाकर ही आजमा सकता हूँ। मैं कुछ करूँगा तभी तो कोई मुझे पहचानेगा, सब मुझे आपके नाम से जानते हैं। अब मैं ऐसा काम करूँ जिससे लोग मेरे नाम से आपको जानने लगे। आप मुझे जाने की अनुमति प्रदान करें। मैं शीघ्र विदेश जाना चाहता हूँ।

धनावह ने कहा– अपनी माता को तो पूछो, वो तुमको जाने देगी? अभी तो मेरा मन भी तैयार नहीं है। बेटा, आज तक तुम कहीं भी अकेले नहीं गये हो और जा भी रहे हो तो हमसे बहुत दूर जा रहे हो, वहाँ तुम्हारा अपना कौन सगा–संबंधी होगा ?

अमरकुमार ने कहा– पिताजी, अब मैंने जाने का निश्चय कर लिया है। माँ को आप समझा देना। मैं अभी माँ से भी बोल देता हूँ।

अमरकुमार अपनी माता के कक्ष में गया। चरण स्पर्श किये और उसके पास बैठ गया। माँ ने भी बड़े प्रेम से अपने लाड़ले पुत्र को आशीर्वाद दिया। कहो पुत्र, आज तुम घर पर जल्दी आ गये हो, सब ठीक तो है। अमरकुमार ने कहा– हाँ माँ, आपके आशीर्वाद से सब ठीक है। मैं आपसे कुछ निवेदन करने आया हूँ। माँ ! मुझे वचन दो, मेरी बात सुनकर मुझे मना नहीं करोगी। धनवती सेठानी ने कहा– ऐसी भी क्या बात है जो तू मुझसे वचन माँग रहा है। चल दिया वचन, तेरी खुशी में मेरी खुशी है। बोल क्या बोलने आया है ? तुझे देखकर तो ऐसा लग रहा है, तू खुशी की बात ही बोलने वाला है।

अमरकुमार ने कहा– हाँ माँ, तू मेरा चेहरा देखकर पहचान गई। बात तो खुशी की है पर तू पहले सुनले फिर बताना।

हर व्यक्ति का चेहरा खुशी और गम को बता देता है। चेहरा देखकर सामने वाला पहचान जाता है कि ये व्यक्ति खुश है या नहीं, इंसान की आँख उसके सुख–दुःख को व्यक्त कर देती है जिसके मन में उदासी है और बाहर से वह छुपाने की कितनी ही कोशिश करे वह कभी छुपा नहीं सकता।

धनवती ने पूछा– पुत्र ! क्या कहना चाहते हो ?

अमरकुमार बोला– माँ, मैं अपने कुछ मित्रों को साथ लेकर विदेश में व्यापार करने जाना चाहता हूँ। मेरी सब तैयारी हो गई है।

बस तुमसे अनुमति लेना बाकी था। अब तुम मुझे मत रोकना, मुझे खुशी–खुशी आज्ञा दे दो।

धनवती बोली– बेटा, ये तू क्या कह रहा है, यहाँ रहकर भी पैसा कमाया जा सकता है। देख, तेरे पिताजी ने भी यही रहकर इतना धन कमाया है, वो भी अब विदेश जाने लगे हैं। हमारे पास इतना तो धन है। तेरे सिवा इस घर में है ही कौन ? सब कुछ तो तेरा ही है। व्यापार करना ही है तो भी यहीं पर रहकर कर। बाहर विदेश में जाने की कोई जरूरत नहीं है। हमें और धन, रुपया–पैसा नहीं चाहिये। तेरे पिताजी ने बहुत पैसा कमा लिया है। तू तो आराम से घर में बैठ, अभी तेरी उम्र ही क्या है ? मैं तो तुझे नहीं जाने दूँगी, मैं तेरे बिना कैसे रहूँगी ? नहीं बेटा, मैं तो ऐसा वचन भी नहीं निभा सकती।

अमरकुमार ने अपनी माँ की गोद में सिर रख दिया और बोला– माँ थोड़े दिन के लिये जाने दे मुझे भी व्यापार करना सीखना है। पिताजी ने जो कुछ कमाया है, वो उनकी मेहनत से कमाया है। आज उनके भाग्य में धन है। कल के दिन मेरे से लक्ष्मी रूठ गई तो मैं क्या करूँगा ? किसकी चौखट पर भीख माँगने जाऊँगा। हर व्यक्ति को अपना और अपने परिवार का भरण–पोषण करने की कला तो आना ही चाहिये। मैं अभी व्यापार नहीं करूँगा तो फिर कब करूँगा ? मुझे भी अपनी किस्मत आजमाने के लिये जाने दो, मैं अपने भाग्य को देखना चाहता हूँ। फिर शीघ्र ही वापस आ जाऊँगा। अब मुझे जाने की तैयारी करना है, मैं चलता हूँ।

अमरकुमार अपने कक्ष में आया, अपनी प्रिया से बोला– प्रिये ! मैं अपने कुछ मित्रों को साथ लेकर विदेश में व्यापार को जा रहा हूँ। तुम यही रहना, यहाँ रहकर खूब धर्म साधना करना, अपने माता–पिता से भी कभी–कभी मिलने जाया करना। मेरे माता–पिता की सेवा करना, साधु–संतों की सेवा करना।

मुझे अपने सुख–दुःख के समाचार भेजती रहना। मैं भी तुम्हारे पास समाचार भेजता रहूँगा।

सुर सुन्दरी अमरकुमार की बात सुनकर टप–टप आँसू बहाने लगी। स्वामी ये आप अचानक क्या कह रहे हैं ? आप बोलते ही रहेंगे या मेरी भी सुनेंगे। उसने रोते हुये कहा– सुनिये प्राणनाथ ! मैं आपके बिना इतने बड़े भवन में अकेली कैसे रहूँगी ?

अमरकुमार उसकी तरफ मुस्करा कर बोला– तुम कुछ भी बोलो, अब तो अकेली रहना पड़ेगा।

सुर सुन्दरी ने अपने आँसू पोंछ लिये और बोलने लगी– प्राणनाथ ! आपके बिना मैं इतना समय कैसे बिताऊँगी ? आप यहीं पर व्यापार कीजिये, मैं कहाँ आपको रोक रही हूँ। मेरा हँसना, श्रृंगार करना, खुश रहना, खाना–पीना, अच्छे वस्त्रादि धारण करना, ये सब आपके पीछे चले जायेंगे। मेरे जीवन में अंधकार छा जायेगा।

स्वामी ! मैं कभी धर्म करूँगी, किसी गुरु के पास जाऊँगी, धर्म की चर्चा करूँगी, तब मेरा मन प्रसन्नचित होगा, मुझे प्रसन्न मुख देखकर लोग मेरे ऊपर कलंक लगायेंगे। मेरा हँसना भी मुश्किल हो जायेगा। मैं लोगों को दिखाने के लिये आपके आने तक चेहरा उदास बनाकर रही तो सब लोग मेरी तारीफ करेंगे। ये अपने पति को कितना चाहती है। महिलायें घर आकर समझायेंगी। आपने भी तो शास्त्रों का अच्छे से अध्ययन किया है। उनमें लिखा है, कुछ चीजों को कभी सूना नहीं रखना चाहिये।

1. शय्या, 2. आसन, 3. भोजन, 4. द्रव्य, 5. राज्य, 6. रमणी, 7. घर, इनको कभी भी खाली (सूने) नहीं छोड़ना चाहिये। सूना छोड़ने पर कोई भी अधिकार कर लेता है। इसलिये मैं तो आपके साथ में चलूँगी।

अमरकुमार ने कुछ सोच–विचार करके सुर सुन्दरी को मौन स्वीकृति दे दी। सुर सुन्दरी को चलने की अनुमति मिलने पर भी उसने कहा– मैं आपके मुँह से सुनना चाहती हूँ। बोलो– स्वामी ! मुझे साथ लेकर चलोगे ना।

अमरकुमार ने हँसते हुये कहा– तुम यहाँ नहीं रुकना चाहती हो तो चलो, जो भी परिस्थिति सामने आयेगी, उससे डटकर मुकाबला करना पड़ेगा।

सुर सुन्दरी पति के मुँह से सुनकर बहुत खुश हुई। उसने शीघ्र ही जाने की तैयारी कर ली। जाने से पूर्व वह अपने माता–पिता से मिलने गयी। पिता ने भी एक ही शिक्षा दी जो शिक्षा तेरी माँ ने दी है, उन्हें हमेशा याद रखना। इतने वर्षों में पता नहीं तेरे जीवन में क्या उतार–चढ़ाव आयेंगे; परन्तु तू मेरी बेटी है, कभी घबराना नहीं, सुख–दुःख आते ही रहेंगे, फिर तू अपने पति के साथ जा रही है, तू उनका हर पग पर साथ देना, उनकी छाया बनकर हरपल उनके साथ रहना। जा बेटी हमारा आशीर्वाद तेरे साथ है। अपना ध्यान रखना।

सुर सुन्दरी ने माता–पिता को प्रणाम किया, सब परिजन से, सखियों से विदाई लेकर पुनः अपने ससुराल में आई।

अमरकुमार के साथियों ने जहाज पर सारा सामान रख दिया।

अमरकुमार ने माता–पिता को प्रणाम किया, उनसे विदाई ली, माता–पिता से कहा– आप अपना ध्यान रखना। मेरी चिंता मत करना, मैं 12 वर्ष होते ही लौट आऊँगा। माता–पिता ने पुत्र के सिर पर हाथ फेरा और कहा बेटा अपना और बहू का ध्यान रखना, वो राजमहल में बड़ी हुई है, उसे किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होना चाहिये। उसको कभी अकारण मत डांटना, उस पर क्रोध मत करना।

सुर सुन्दरी ने भी सास–ससुर को प्रणाम किया, आज्ञा माँगी। दोनों ने आशीर्वाद दिया, सदा खुश रहना बेटी– सास ने सुर सुन्दरी के सिर पर हाथ फेरा, उसे उठाया और कहा– पुत्री मैं तुझे क्या उपदेश दूँ, तू स्वयं इतनी पढ़ी लिखी है, तू सब कुछ समझती है।

मैं तो बस इतना कहती हूँ, बेटी पहली बार मेरा बेटा इतनी दूर जा रहा है। ये कभी मुझे छोड़कर नहीं गया, ये मेरी आँखों का तारा हमेशा चमकता रहे। तू इसका बहुत ख्याल रखना, कभी भी इसे हमारी याद आये तो उसे तू ही धैर्य बँधाना। दोनों एक दूसरे का ध्यान रखना।

धनावह सेठ ने अपने पुत्र और पुत्रवधू की लम्बी यात्रा निर्विघ्न सानंद सम्पन्न हो इसके लिये पुत्र के हाथ में शुभ सूचक पानीवाला नारियल हाथ में दिया और कहा बेटा– अपनी मन और इन्द्रियों को सदा वश में रखना, कभी व्यसनों में मत फंसना।

सूर्योदय के पहले ही उठना। सतत् प्रभु का स्मरण करते रहना, पंच परमेष्ठी का नाम स्मरण करके ही कार्य प्रारम्भ करना। तुम्हारे साथ जाने वाले तुम्हारे जो सहायक हैं। तुम्हारी सेवा में रत रहने वाले हैं उनसे कुछ भी गलती हो जाये तो इनके साथ कठोरता का व्यवहार मत करना। उनसे कुछ भूल हो जाये तो उन्हें क्षमा कर देना। अपने बल को देखकर किसी से युद्ध या संधी करना, धैर्य से काम लेना। साम, दाम, दण्ड, भेद जैसे भी हो वैसे अपना काम करना। अपने सुख–दुःख का समाचार देते रहना। बहू को कभी भी कष्ट ना हो, इस बात का सदा ध्यान रखना। दोनों ने अपने माता–पिता को प्रणाम किया।

अमरकुमार और सुर सुन्दरी परिवार से विदाई लेकर जहाज के कमरे में जा बैठे। जहाज रवाना हुआ।

जाते हुये जहाज को माता–पिता परिजन तब तक देखते रहे जब तक वह आँखों से ओझल नहीं हुआ। सेठ ने सेठानी से कहा– चलो, अब जहाज नहीं दिख रहा है, हमारे बच्चे बहुत दूर चले गये। अब हम अकेले ही रह गये हैं। उनके लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं। ये शीघ्र लौटकर आये।

जहाज में अमरकुमार आदि

चलो देवी, अब महल में चलें। अब उदासी छोड़ो। सेठानी कहने लगी– स्वामी ! आज तो महल सुनसान हो गया है। सन्नाटा छा गया है। बहु–बेटे के बिना ये महल वीरान लग रहा है। आज तो कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। मैं इतने दिन अकेली कैसे रहूँगी।

सेठ ने कहा– धैर्य धारण करो सेठानी ! धीरे–धीरे सब ठीक हो जायेगा। तुमको क्या मुझे भी दोनों की बहुत याद आ रही है। हमारा पुत्र और हमारी बहू ऐसे आज्ञाकारी हैं कि हम उनको पलभर भी भूला नहीं सकते बस अब हमें एक ही प्रार्थना करना है। हमारे बेटे–बहू अपने कार्य में सफल हो जाये।

चौथा सर्ग

जहाज सिंहल द्वीप के टापू में पहुँचा, वहाँ का वातावरण देखकर सबका मन वहीं रूकने का हो गया। सबने अमरकुमार से कहा– हम दो–चार दिन यहीं विश्राम करेंगे। सब जहाज से शीघ्र टापू पर उतरे। अमरकुमार ने कहा– मित्रों दूर–दूर तक कहीं भी टापू नहीं दिखाई दे रहा है इसलिये हम दो–चार दिन यहाँ ठहरकर थकान उतारेंगे। फिर आगे बढ़ेंगे। जब सब शीतल जल पीने के लिये भर रहे थे तभी उनमें से एक व्यक्ति पहले भी यहाँ आया था।

उसने कहा ! हे अमरकुमार, हम यहाँ नहीं रूक सकते, हमें अभी ही यहाँ से निकलना पड़ेगा। इस पहाड़ में तो मानवभक्षी राक्षस रहता है वह जिस मनुष्य को देखता है उसे खा जाता है। तुम सबको अभी आदेश दे दो, यहाँ से हमें जल्दी ही चलना है।

अमरकुमार और सुर सुन्दरी सुन्दर टापू पर घूमते हुए

अमरकुमार ने कहा– ठीक है, मित्र मैं सबको बोल देता हूँ। अमरकुमार ने सबसे कहा– सब लोग पानी फल आदि जो कुछ भी लेना चाहते हैं। वे सब शीघ्र भरले, हमें यहाँ से अभी निकलना है। हम यहाँ नहीं रूक सकते।

सुर सुन्दरी और अमरकुमार भी उस टापू का अवलोकन करने के लिये भ्रमण करने लगे। दोनों को वहाँ का दृश्य बड़ा ही मनभावन लग रहा था।

एक बड़ा वृक्ष देखकर दोनों ने एक–दूसरे से कहा– चलो थोड़ी देर इस वट वृक्ष के नीचे विश्राम करते हैं। दोनों बातें करते हैं, बात ही बात में सुर सुन्दरी अपने बचपन की बातें करने लगती है। हम दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ते थे। सुर सुन्दरी एक–एक विद्यालय में घटी घटनाओं को बताने लगी। बात करती–करती सुर सुन्दरी अमरकुमार की गोद में लेट गई। लेटकर बातें करने लगी। सुर सुन्दरी ने कहा– स्वामी ! मुझे नींद आ रही है। ठण्डी–ठण्डी हवा चल रही है, थोड़ी देर मैं सो रही हूँ। सुर सुन्दरी को सोते ही नींद आ गई।

अमरकुमार को सुर सुन्दरी की वह बात याद आ गई जो बात सुर सुन्दरी ने गुरुकुल में पढ़ते समय एक दिन उसके पल्लु से 7 कौड़ियाँ निकालने पर कहीं थी। इसने मेरा उस दिन बहुत अपमान किया था, मेरा तिरस्कार किया था। अब मैं नहीं छोड़ूँगा, इससे अपमान का बदला लेकर रहूँगा। इसने बोला था– मैं सात कौड़ी में राज्य प्राप्त करती। उस दिन तो मैंने इसे छोड़ दिया था। पर आज नहीं छोड़ूँगा। आज मैं तिरस्कार का बदला लूँगा। अब इसके अभिमान को चूर्ण करूँगा। अमरकुमार को मन ही मन में तीव्र क्रोध आ गया।

अमरकुमार ने सुर सुन्दरी का सिर अपनी गोद से धीरे से एक पत्थर पर रख दिया। उसके साड़ी के पल्ले में सात कौड़ियाँ बाँध दी और जो वाक्य बचपन में सुर सुन्दरी ने कहे थे वही लिखकर कौड़ियों के साथ रख दिया और जाने को खड़ा हो गया। वो ऐसे छल करके जा रहा था तो उसकी आत्मा भी गँवाही नहीं दे रही थी। मैं ये अच्छा नहीं कर रहा हूँ। बचपन की बातों का बदला नहीं लेना चाहिये, इसके साथ मेरा विवाह हुआ है, मैंने तो हजारों लोगों के बीच में इसकी रक्षा करने का वचन दिया था, ये मेरे प्रेम के वशीभूत होकर मेरे साथ आई है, मैं इसे छोड़कर ऐसे चला जाऊँगा तो यह मेरे बिना जिन्दा नहीं बचेगी। मैं इसके साथ विश्वासघात कर रहा हूँ। क्या करूँ इसे छोड़कर जाऊँ या नहीं जाऊँ। अमरकुमार थोड़ा आगे बढ़ा, फिर लौटकर आया, फिर से उसको देखा, फिर से मन परिवर्तित हो गया, उसके मन में द्वंद युद्ध चलने लगा, आगे बढ़ता है तो सोचता है बाल्यावस्था में जो गलती की है, उसे भूला देना चाहिये और उसके पास आता तो उसको फिर वही बात याद आ जाती।

अमरकुमार सुर सुन्दरी के सिर पर हाथ रखता है फिर भी उसकी नींद नहीं खुली। ये उसके कर्म का तीव्र उदय था। उसके मन में बदले की आग तीव्र रूप से जलने लगी।

जंगल में सुन्दरी सो गई। अमर कुमार जाता हुआ

अमरकुमार ने सोचा– अब मैं जाता हूँ, इसने जैसा किया उसका फल इसे भोगना ही पड़ेगा। जो घात करता है उसका प्रतिघात होता है। अग्नि के पास जब भी जायेंगे, तब वह जलायेगी, पानी के पास जायेंगे तो भीगकर ही आयेंगे। नीम कभी अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता, नींबू अपने खट्टेपन का त्याग नहीं करता है। साँप को कितना ही दूध पिलाया जाये वह कभी अमृत नहीं उगलेगा, विष ही उगलेगा।

जिसका जो स्वभाव है, स्वभाव के अनुसार ही वह फल देता है। इसने भी मेरे साथ जो बुरा किया है उसका फल इसे मिलना ही चाहिये। इसका अभिमान चूर्ण होना ही चाहिये। अमरकुमार भी अपने मन को कठोर करके वहाँ से चला गया। शीघ्र जहाज में आकर बैठ गया और जहाज को रवाना करवा दिया।

अमरकुमार अपनी प्रिय पत्नी, महाराज रिपूमर्दन की राजदुलारी, रती सुन्दरी की लाड़ली बेटी, धनावह धनवती की वधु को जंगल में अकेली छोड़कर आ गया। आते समय सबने एक ही शिक्षा दी थी कि दोनों एक दूसरे का बहुत ध्यान रखना, आपस में मिलजुल कर रहना परन्तु पहले ही पड़ाव में अमरकुमार ने सुर सुन्दरी को छोड़ दिया।

अमरकुमार ने जहाज रवाना करवा दिया और थोड़ी दूर जहाज के जाने पर जोर–जोर से रोने लगा। छाती पीट–पीट कर करूण विलाप करने लगा। हाय मेरी सुन्दरी अब मैं घर जाकर क्या कहूँगा, तेरे माता–पिता को क्या जवाब दूँगा, मैं कैसे व्यापार करूँगा। अपने नगर में कैसे मुँह दिखाऊँगा। अब मैं तेरे बिना कैसे रहूँगा। उसके मित्रों ने अमरकुमार के रोने की आवाज सुनी तो वो सब उसके पास में आये। सबने एक साथ पूछा– तुम क्यों ? रो रहे हो, क्या हो गया, हम जब टापू पर ठहरे थे तब तो तुम बहुत खुश थे। क्या तुमको अपने माता–पिता की याद आ रही है या फिर चंपापुर नगर की याद आ रही है। कुछ तो बोलो मित्र– तुम ऐसे ही रोते रहोगे तो हमें कैसे पता चलेगा ? हमें कुछ तो बताओ।

तब अमरकुमार बोला– क्या बताऊँ, मेरी प्रिया को नरभक्षी राक्षस खा गया है, मैं उसकी रक्षा नहीं कर पाया, अब मैं घर जाकर सबको क्या मुँह दिखाऊँगा। सब मित्रों ने उसे बहुत समझाया– भाई रूदन मत करो, जो होना था वो तो हो गया, धैर्य धारण करो, चुप हो जाओ, उसका रोना जब कम हो गया तब सब लोग अपने–अपने स्थान पर जाकर बैठ गये। जहाज तीव्र रूप से चलने लगा, बड़ी तेजी से जहाज अनुकूल हवा पाकर आगे बढ़ गया।

पाँचवाँ सर्ग

कभी–कभी पुरानी बातें बताने से बड़े कष्टों का सामना करना पड़ता है। इसलिये कभी भी ऐसी बात नहीं बोलना चाहिये, जिसके कारण प्रेम लड़ाई में बदल जाये, कभी पुरानी बातें अति दुःखदायक होती है। सुर सुन्दरी ने मजाक–मजाक में अपने पति को सब बातें बोल दी, वही बात दुःख का कारण बन गई। सुर सुन्दरी की जब नींद खुली तो उसने अपने सिर को पत्थर पर रखा हुआ देखा वह हड़बड़ाकर अमरकुमार को आवाज लगाती हुई उठी, बैठकर इधर–उधर देखने लगी, उसे कोई दिखाई नहीं दिया, वह पहले बैठी थी जब उसे बैठे–बैठे कोई नहीं दिखा तो फिर वो खड़ी हो गई। वृक्षों की आड़ में इधर–उधर जाकर देखने लगी। फिर आवाज दी, स्वामी, स्वामी ! अमरकुमार नाथ आप कहाँ हो ? ये मुझे अकेली छोड़कर कहाँ चले गये, अब मैं कहाँ जाऊँगी, किससे जाकर पुछूँ मुझे ऐसी नींद कैसे आ गई, जो स्वामी यहाँ से चले भी गये, मुझे पता तक नहीं चला, उनकी आवाज मेरे कानों में नहीं पड़ी। उनको उनके साथी यहाँ बुलाने तो आयें होंगे। स्वामी ने मुझे क्यों नहीं उठाया। सुर सुन्दरी का हृदय तीव्रता से धड़कने लगा, वहाँ की ठण्डी हवा उसे काटने लगी, वहाँ की हरियाली उसे भयानक दिखने लगी, जब तक वो सो रही थी तब तक तो उसे सब कुछ अच्छा लग रहा था। जागते ही वहाँ का मनभावन जंगल डरावना प्रतीत होने लगा। जब कोई इंसान अपनों के साथ में होता है तब तक सब जगह अच्छा लगता और अकेला होने पर काँटने लगता है। कुछ दिमाग ही काम नहीं करता है।

सुर सुन्दरी समुद्र की तरफ तेज गति से भागी, मगर किनारे पर पहुँची तो वहाँ जहाज नहीं था, बहुत दूर जहाज जाता हुआ दिखाई दिया, वह एकटक उसको देखती रही, वह भी इतनी दूर चला गया कि पलभर में सुर सुन्दरी की आँखों से अदृश्य हो गया।

जंगल में रोती हुई सुर सुन्दरी

सुर सुन्दरी के हृदय पर इतनी गहरी चोट लगी कि वह जहाज के अदृश्य होते ही हाय बोलकर मूर्छित होकर गिर पड़ी। जब ये राजमहल में थी तब इसके तन में थोड़ी सी वेदना भी होती तो पूरा राजमहल इकट्ठा हो जाता था। आज ऐसे स्थान पर मूर्छित पड़ी है कि उसको कोई उठाने वाला भी नहीं है। अंजना सती के पास एक सखी का सहारा था परन्तु इसके साथ में तो वो भी नहीं है। कर्म भी कैसे–कैसे खेल खिलाता है। इसलिये भगवान ने व सभी महापुरुषों ने इस संसार को असार बताया है। यहाँ कोई किसी का साथी नहीं है, जिसके साथ में माता–पिता व सास–ससुर ने भेजा था वो ही छोड़कर चला गया। पत्नी के लिये पति से बढ़कर कोई सगा संबंधी नहीं है।

जो सगा होकर दगा देता है फिर ऐसे पुरुष को विवाह के बाद परमेश्वर की उपमा क्यों देते हैं ? जो विश्वासघात करे, छोटी सी गल्ती पर इतनी बड़ी सजा दे वह कदापि परमेश्वर नहीं हो सकता, विश्वास करने के लायक नहीं हो सकता। जिस पति को पत्नी की परीक्षा ही लेना है, सजा ही देना है तो उसे बोलकर देना चाहिये। बिना बोले कष्ट देना तो अपराध है, पाप है। बोलकर देने से तो पत्नी मानसिक रूप से तैयार हो जाती है। अपने मनोबल को बढ़ा लेती है।

जो पुरुष पत्नी का सामना नहीं कर सकते हैं, उससे डरते हैं, वो ही चुपचाप कष्ट देते हैं। कायर और डरपोक व्यक्ति ही छुपकर वार करते हैं। माता–पिता ने हमेशा बेटी खुश रहेगी यह सोचकर उसी नगर में सुर सुन्दरी का विवाह कराया था। परदेश में आते ही पति चुपचाप सोती हुई छोड़कर चला गया।

ठण्डी हवा से सुर सुन्दरी की मूर्च्छा दूर हुई। आँख खुलते ही जैसे उसके जीवन में अंधकार छा गया। वह प्राणनाथ, स्वामी, अमरकुमार आप कहाँ हो ? इस तरह बार–बार पुकार कर जोर–जोर से रोने लगी।

उस जंगल में उसके आँसू पोंछने वाला कोई नहीं था, कोई उसकी बात का जवाब देने वाला नहीं था। वहाँ मनुष्य क्या, पशु–पक्षी भी नहीं थे। वहाँ तो केवल वृक्ष थे, छोटी–मोटी लताएँ थी, पेड़–पौधे उसे क्या उत्तर देते, फिर भी पेड़–पौधे जैसे हिल–मिलकर उसे धीरज बंधा रहे थे, उसे आश्वासन दे रहे थे।

सुर सुन्दरी ने इतने आँसू बहाये परन्तु उन्हें पोंछने वाला कोई नहीं था। उसने अपने पल्ले से जब आँसू पोंछे तब पल्ले पर लगी गाँठ उसके हाथ में आई। उसने गाँठ खोली और उसमें रखी सात कोड़ियाँ निकाली, साथ में ही एक पत्र भी निकाला, उस पत्र पर लिखा था–

''सात कौड़ी में राज्य प्राप्त करके दिखाओ'' –अमरकुमार

पत्र को पढ़ते ही सुर सुन्दरी को एक–एक अक्षर दिल को जलाने लगा, हृदय को तपाने लगा, वह पहले रो रही थी परन्तु पत्र पढ़ते ही उसका रोना बन्द हो गया। वह क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुई थी, उसका क्षत्रियत्व जाग उठा, क्षत्रिय कभी हार नहीं सकता, वह झुक नहीं सकता, वीरता के साथ हर क्षेत्र में मुकाबला करने को तैयार रहता है।

सुर सुन्दरी ने कहा– मेरे स्वामी ने मेरे प्रेम और मेरे त्याग का बदला अच्छा लिया, आखिर ये बनिया है, व्यापारी है। मेरी माता ने भी इसमें क्या देखा था जो मेरा विवाह ऐसे गिरे हुए व्यक्ति से करवाया। पिताजी तो तैयार भी नहीं थे, माता ने कहकर इसके साथ विवाह करवाया है। आखिर ये बचपन का चोर ही तो है। मैंने क्यों इससे विवाह किया ? आज मुझे पश्चात्ताप हो रहा है, किसी राजमहल में जाती तो अच्छा होता। डरपोक कहीं का, इतनी ही तेरे अन्दर हिम्मत थी तो मुझे बोलकर जाता, मैं तुझे राज्य प्राप्त करके ही दिखा देती है। अभी भी करके दिखाऊँगी।

सुर सुन्दरी को तीव्र क्रोध आ गया वह जल्दी–जल्दी समुद्र के किनारे घूमने लगी, तू मुझे ऐसी जगह छोड़कर गया है। मैं कैसे यहाँ से जाऊँगी, मुझे घर में ही छोड़ देता, ऐसा ही करना था तो मुझे साथ में क्यों लाया ? मुझे छोड़ते हुये तेरा कलेजा भी नहीं फटा, तुझे मुझ अबला पर दया भी नहीं आई, धिक्कार है तुझे, मैंने तेरा क्या बुरा किया था, मैं तो जब से तेरे घर में आई हूँ तब से पूरे परिवार का हमेशा सम्मान कर रही हूँ, किस बात का बदला लिया तूने ?

धीरे–धीरे सूर्य भी अस्ताचल की ओर बढ़ने लगा। ठण्डी हवा में झुमते हुये वृक्ष भी सुर सुन्दरी को कुछ बोल रहे थे; परन्तु सुर सुन्दरी को क्रोध आने के कारण उसे कुछ भी सुनाई नहीं पड़ रहा था। घूम–घूमकर जब वह थक गई तब वह एक वृक्ष के नीचे बैठ गई। कोई भी व्यक्ति अधिक समय तक क्रोध नहीं कर सकता। अधिक से अधिक अन्तर्मुहूर्त तक ही कोई भी कषाय तीव्र रूप में रहती है। फिर वह तीव्र मंद होती रहती है। क्योंकि क्रोध करना किसी भी जीव का स्वभाव नहीं है।

धीरे–धीरे सुर सुन्दरी का क्रोध भी शांत हुआ। चारों और अंधेरा छा गया, उसका विवेक जागृत हो गया। नारी में सहनशीलता होती है। वह जो भी कुछ भी गुरु से सीखकर आई थी वही सब उसके मस्तिष्क में घूमने लगा। सुर सुन्दरी की आत्मा उसे शांति का मार्ग दिखाने लगी। वह अपने आपको सम्बोधित करने लगी। अरे सुर सुन्दरी तू नारी होकर कैसे विचार मन में ला रही है। अपने वचनों से बोल रही है, पुरुष तो निष्ठुर निर्दय कठोर पाषाण हृदय होता है परन्तु नारी का मन ऐसा नहीं होता है। नारी तो कोमल, दया, करुणा, समता की मूरत होती है। पुरुष लूटता है, स्त्री सर्वस्व दान करती है। नारी का वास्तविक रूप विरोधी के सम्मुख प्रगट होता है। पुरुष तिरस्कार करता है, स्त्री प्रेम करती है।

स्त्री का वास्तविक रूप माँ के रूप में है, वह भूखी–प्यासी रहकर भी अपनी संतान को खिलाती और पिलाती है। पाल–पोसकर बड़ा करती है।

अपनी ममता लुटा देती है। स्त्री के अनेक रूप समय–समय पर प्रगट होते हैं कभी देवी तो कभी दुर्गा, कभी लक्ष्मी तो कभी सरस्वती, मैं भी नारी हूँ। मुझे भी नारी ही रहना है। वास्तव में नारी अपने रूप को कभी नहीं छोड़ सकती, कभी भी वो पुरुष की तरह कठोर नहीं हो सकती, उसे कठोर बनाया जाता है।

पेड़ के नीचे बैठी सुर-सुन्दरी

सुर सुन्दरी भी गाल पर हाथ रखकर सोचने लगी, फिर से उसका क्षत्रिय भाव जाग उठा, मैं क्षत्रिय संतान हूँ। मैं भी बदला अवश्य लूँगी, लेकिन उनके समान कष्ट देकर नहीं ? मैं जानती हूँ, नारी का धर्म क्षमा करना है, परन्तु कायर बनकर क्षमा नहीं करूँगी।

जो पुरुष स्त्री जाति को तुच्छ समझते हैं, घटिया व्यवहार करते हैं, स्त्रियों के सद्गुणों का दुरुपयोग करते हैं। उन सब पुरुषों को अब मैं रास्ता दिखाऊँगी। उनको सन्मार्ग पर लाऊँगी। वह बैठे–बैठे जब ये सब बातें सोच रही थी, इतने में वहाँ गाढ़ अंधकार हो गया, सुर सुन्दरी भी अंधेरा देखकर भय से काँपने लगी, वह सोचने लगी आज की रात भी मैं जीवित रहूँगी या नहीं। भय के मारे वह काँपने लगी, दिल जोर–जोर से धड़कने लगा।

मंत्र जाप करते हुए सुर-सुन्दरी

उसे प्रभु के मंत्र का स्मरण हुआ। उसने पढ़ा था, गुरु ने उसे सिखाया था जब भी कहीं दुःख या संकट आये उस समय णमोकार मंत्र जपना। सुर सुन्दरी भी आँखें बंद करके णमोकार मंत्र का जाप करने लगी, प्रभु के मंत्र जाप में तल्लीन हो गई।

आता हुआ राक्षस

अचानक दूर से एक पत्थर के फटने की आवाज आती है। वह आँख खोलकर देखती है सामने की पहाड़ी से एक भयंकर मूर्ति बाहर निकल कर आ रही है। उसका हृदय भय से काँपने लगा, वह मूर्ति नहीं थी, वह नरभक्षी राक्षस था। वह राक्षस सुर सुन्दरी की तरफ आने लगा।

सुर सुन्दरी ने जब राक्षस को अपनी ओर बढ़ते देखा तो उसने णमोकार मंत्र से अपने शरीर पर रक्षा कवच बनाया और एकाग्रचित्त होकर महामंत्र को जपने लगी। राक्षस धीरे–धीरे उसे खाने की इच्छा से आगे बढ़ रहा था, परन्तु जब वह सुन्दरी के पास पहुँचा तो उसकी खाने की भावना समाप्त हो गई। क्योंकि सुर सुन्दरी णमोकार मंत्र का जाप कर रही थी इसलिये मंत्र का प्रभाव उस राक्षस पर भी पड़ा। वह राक्षस शांति से सुर सुन्दरी के पास आकर दया के वशीभूत होकर बड़े प्रेम से बोला– बेटी, तुम कौन हो ? यहाँ कैसे आई हो, तुम यहाँ किसके साथ में आई ? तुम्हारे साथ और कौन है ?

सुर सुन्दरी बेटी शब्द सुनकर भयरहित हो गई, उसने अपने ऊपर बीती व्यथा सुनाई, राक्षस सुनकर बड़ा दुःखी हुआ। राक्षस ने कहा– बेटी चिंता मत करो, तुम यहाँ आनंद से रहो, यहाँ तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी, तुम यहाँ अपना समय बिताओ।

सुर सुन्दरी वहीं रहने लगी, वहाँ लगे हुए मधुर फलों को खाती और झरने का पानी पीती व साथ ही अपने पति के जीवन की मंगल कामना करती हुई आनंद से समय बिता रही थी। इस तरह उस हरे–भरे मनोहारी उपवन में रहते हुये उसने कई महीने बीता दिये। उसे भी कहीं जाने की चिंता नहीं थी। कोई कुछ बोलने वाला भी नहीं था, वह बड़ी खुश थी। प्रभु का नाम लेकर रह रही थी।

ध्यान करते हुए सुर–सुन्दरी

***

एक दिन एक साहुकार का जहाज उसी टापू पर आकर ठहरा। सेठ को बड़ी जोर से प्यास सताने लगी। वह सेठ पानी पीने के लिये वही आया जहाँ सुर सुन्दरी वृक्ष की छाया में आँख बंद करके बैठी थी, प्रभु का ध्यान कर रही थी।

सुर सुन्दरी को देवी समझ कर सेठ ने साष्टांग नमस्कार किया। हाथ जोड़कर प्रार्थना की।

हे देवी माँ ! मैं व्यापार करने जा रहा हूँ। मुझे सफलता मिले, मेरे सर्वकार्य सिद्ध हो, मैं पुनः आकर तुम्हारे दर्शन करूँगा।

सुर सुन्दरी सेठ के वाक्य सुनकर आँखें खोलकर बोली– हे पूज्य पिता ! मैं मानवी हूँ देवी नहीं।

सेठ को सुनकर अति आश्चर्य हुआ। वह थोड़ी देर तो चुपचाप खड़ा रहा, देखने में देवी से भी अधिक सुन्दर लग रही है। यहाँ तो कोई महल मकान कुछ भी नहीं है, फिर ये मनुष्यनी कैसे हो सकती है। इसी से पूछता हूँ। तुम मानवी हो तो यहाँ कैसे आई ? यहाँ तो कोई दिखाई नहीं दे रहा है। तुम यहाँ जीवित कैसे हो ? तुम्हारा परिवार भाई–बांधव सब कहाँ हैं।

सुर सुन्दरी ने अपने ऊपर बीती सारी बात आद्योपांत बताई। सेठ को सुनकर अति दुःख हुआ, वह आश्चर्य से उसकी बातें सुनता रहा, उसके मन में लालच आ गया। वह मन में सोचने लगा, ये सुकुमारी बड़ी भोली है। इसको तो मैं शीघ्र ही अपने वश में कर लूँगा। इसे अपने साथ ले जाता हूँ, इसे पूछता हूँ।

सेठ ने सुर सुन्दरी से पूछा– तुम यहाँ वियाबान जंगल में खुश हो, तुमको अब मनुष्यों के बीच में नहीं जाना है।

सुर सुन्दरी के हृदय में हलचल मची, वह अंतरंग से आन्दोलित हो उठी। कुछ पल के लिये चुप होकर पृथ्वी को देखती रही। क्या करूँ, क्या बोलूँ, इस सज्जन व्यक्ति को क्या जवाब दूँ ? मैं जानती हूँ इस जंगल में रहकर मैं अधिक समय तक अपने माता–पिता के बिना नहीं रह सकती, खासकर पति के बिना पत्नी अधूरी है, वह कभी भी अपने पति के बिना नहीं सुखी नहीं रह सकती।

सुर सुन्दरी बोली–विश्वासघात करने वाले पुरुष समाज पर मुझे बड़ी घृणा होती है। पुरुष केवल नारी पर अत्याचार करता है, उनका शोषण करता है, प्रताड़ित करता है। मुझे अब पुरुषों पर विश्वास नहीं होता।

सेठ सुर-सुन्दरी से चलने को बोलता हुआ

सेठ ने कहा– सुनो, पाँचों अंगुलियाँ एक समान नहीं होती है। सारे पुरुष एक जैसे नहीं होते, तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा दूँगा। यहाँ तुम्हारी रक्षा करने वाला कोई नहीं है।

यहाँ कोई दुष्ट पुरुष आ गया तो पता नहीं तुम्हारे साथ वो क्या करेगा ? इसलिये तुम मुझे अपने पिता के समान समझकर मेरे साथ चलो, मैं तुम्हारे साथ विश्वासघात नहीं करूँगा, तुम्हें धोखा नहीं दूँगा। सुन्दरी अब इतना मत सोचो और चलो।

सुर सुन्दरी सेठ की बात सुनकर सोचने लगी। इस सेठ के साथ जाना उचित रहेगा या अनुचित ? मुझे जाना चाहिये या नहीं ? उसने जाना उचित समझा। मैं अगर यहीं रही तो फिर मुझे सात कौड़ियों में राज्य कैसे मिलेगा? राज्य प्राप्त करने का भी उद्योग करना है।

सेठ ने कहा– क्या सोच रही हो सुन्दरी, इतना मत सोचो, क्या तुम्हें अभी भी मेरे ऊपर विश्वास नहीं हुआ।

सुर सुन्दरी बोली– ऐसी बात नहीं है, मैं आपके साथ चलने को तैयार हूँ। आप मुझे किसी मनुष्यों के टापू पर उतार देना। अभी मैं अपने देश में नहीं जाऊँगी, जब तक मेरे स्वामी नहीं आयेंगे तब तक मैं अपने नगर में नहीं जाऊँगी। मैं अपने पति के कहे अनुसार सात कौड़ियों में राज्य प्राप्त कर लूँगी। आप प्रतिज्ञा करो, मेरे साथ अपनी पुत्री की तरह व्यवहार करोगे, मुझे एकांत में रहने दोगे।

आप धर्म की साक्षी में वचन पालन करने का संकल्प करेंगे, तब तो मैं आपके साथ चलने को तैयार हूँ।

सेठ ने कहा मुझे तुम्हारी हर बात स्वीकार है, तुम खुशी–खुशी अकेली रहना। मन ही मन सेठ बड़ा खुश हो रहा था। सेठ के मन को सुर सुन्दरी नहीं समझ पाई कि इसके मन में क्या पाप छुपा है। हम सामान्य प्राणी किसी के मन की कुटिलता को नहीं समझ पाते हैं। मन की बात को मनःपर्ययज्ञानी या केवलज्ञानी भगवान ही जान सकते हैं और कोई नहीं।

जिसके साथ आज खून का संबंध होता है, ऐसी अपनी बेटी पर भी पिता अपना मन बिगाड़ सकता है और जिसके साथ कोई खून का रिश्ता नहीं है उसके साथ तो कोई भी पुरुष एकांत पाकर अपना मन खराब कर ही लेता है।

सुर सुन्दरी की सुन्दरता को देखकर सेठ पहले ही उस पर मोहित हो गया था। वह भी सुर सुन्दरी को बहला फुसला कर झूठा विश्वास देकर अपने साथ जहाज में लेकर आया था। उसके मन में जो पाप था वह पाप कुछ समय में उभरकर आया, वह सेठ रात्रि के समय सुर सुन्दरी के पास तीन–चार बार जाने को तत्पर हुआ, जाने को खड़ा होता फिर रुक जाता, फिर जाने की भावना करता, फिर अपने कदम पीछे करता। परन्तु जब मनुष्य किसी को चाहता है तो फिर उसके परिणाम को नहीं सोचता कि मेरे जाने से क्या होगा ? इन्द्रियों के वश में हुआ व्यक्ति अपनी इज्जत की भी परवाह नहीं करता है।

चार–पाँच दिन तक तो सेठ सुर सुन्दरी के पास गया और उससे कुशलक्षेम पूछी, उसको गन्दी निगाहों से टकटकी लगाये देखता रहा। सुर सुन्दरी ने कभी उसको नहीं देखा, नीचे मुख किये उस सेठ को जवाब दे देती थी। सुर सुन्दरी हरदम पृथ्वी पर ही देखती रहती।

सेठ ने सुर सुन्दरी को पूरी तरह विश्वास कराया कि मैं बहुत अच्छा सज्जन व्यक्ति हूँ इसलिये वह बार–बार उसके पास जाकर हालचाल पूछता रहा। सेठ के मन में वासना बढ़ रही थी। जाता और फिर लौटकर आता, कब ये सुन्दरी मेरी बनेगी, कैसे इसे अपने मन की बात बोलूँ ?

आखिर एक दिन सेठ बड़ी हिम्मत करके सुर सुन्दरी के पास पहुँचा, उसके पास जाकर बैठ गया, धीरे–धीरे वह सेठ उसके पास एकदम नजदीक पहुँच गया।

सुर सुन्दरी सेठ को अपने पास में बैठा हुआ देखकर आश्चर्यचकित हो गई और भय से थर–थर काँपने लगी। ये क्या ? उसकी तरफ जब सुर सुन्दरी ने देखा तो उसके चेहरे पर वासना दिखाई दी। सुर सुन्दरी अपने स्थान से उठी और दूर जाकर खड़ी हो गई। प्रणाम सेठजी।

सेठ ने कहा– राजकुमारी बैठो, तुम मुझे देखकर ऐसे खड़ी क्यों हो गई? डरो मत, प्रसन्न होवो तुम इस तरह काँप क्यों रही हो, तुम ठीक तो हो। सुर सुन्दरी पैर के अंगूठे से जमीन कुरेदती हुई बोली– प्रभु की दया से सब ठीक है।

अक्सर देखा जाता है जब भी कोई स्त्री से बात करता है, पूछता है या वो संकट में होती है तब वह जमीन को कुरेदती है। सेठ ने कहा– सुन्दरी ! मैं तुम्हारे पास एक प्रार्थना लेकर आया था, मेरी बात स्वीकार करोगी।

सुर सुन्दरी मन ही मन में सोचने लगी, ये दुष्ट आज दुष्ट विचार से मेरे पास में आया है। उसने कहा– मैं आपके किस योग्य हूँ ? जो आपकी बात पूरी कर सकूँ।

सेठ ने कहा– तुम सब कुछ करने में समर्थ हो।

सुर सुन्दरी ने पूछा– सुनाओ मैं भी तो सुनू आप आखिर कहना क्या चाहते हैं ?

सेठ ने कहा– तुम इतनी भी भोली मत बनो, सोचो जरा, मैं तुमको जहाज में क्यों लाया हूँ।

सुर सुन्दरी ने कहा– आप मुझे सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के लिये लाये हैं, आपको मुझ अबला पर दया आई इसलिये आप मुझे लेकर आये।

सेठ (हँसता हुआ)– कटाक्ष के साथ बोला, क्या भोली–भाली बातें करती हैं। ऐसी बोल रही हो, जैसे कोई दूध पीता बच्चा बोलता है। अब ध्यान से कान खोलकर सुनो– मैं तुमको हमेशा–हमेशा के लिये अपना बनाने के लिये लाया हूँ।

सुर सुन्दरी बोली– सेठजी में तो हमेशा आपकी पुत्री रहूँगी, आप मुझे बेटी बनाकर लाये थे। मैंने आपको अपना पिता माना है। वही मानकर आपके साथ में आई हूँ। कोई भी पिता अपनी बेटी के साथ ऐसा गलत काम नहीं करता है।

सेठ सुनकर स्तब्ध रह गया, उसके हृदय पर मानों किसी ने कटार ही चला दी हो। उसने जो सोचा था, इसे मैं अपनी रानी बना लूँगा। उसने क्रोध में बोला– बेटी नहीं, मैं तुझे अपनी स्त्री बनाने लाया हूँ। सुर सुन्दरी को सेठ से घृणा हो गई– वो झुंझला कर बोली– छी, धिक्कार है तुझे, पापी, दुष्ट, अधर्मी, कहीं के। क्या इसलिये आश्वासन देकर विश्वास दिलाकर प्रतिज्ञा करके मुझे लाये हो ?

सेठ हँसता हुआ बोला– हाँ, हाँ, कोई पुरुष बिना रिश्ते के किसी स्त्री को अपने साथ क्यों लायेगा ? अरे कभी मछुवारा मछली को मीठे पानी में छोड़ने के लिये पकड़ता है क्या ?

शिकारी पक्षी को एक जंगल से दूसरे जंगल में छोड़ने के लिये जाल बिछाता है क्या ? आम आदि फलों को कोई फेंकने के लिये लाता है क्या ? उस समय तो प्रतिज्ञा करना यानि कि तुमको साथ में लाना था। मैं प्रतिज्ञा नहीं करता तो तू मेरे साथ में नहीं आती, तेरा रूप देखकर ही मैंने जाल में फँसाने की इच्छा की, तुझे वहाँ जंगल में मैं छोड़ भी देता तो और कोई तुझे वहाँ से ले जाता।

सुर सुन्दरी क्रोध में तमतमा उठी, जोर से चिल्लाती हुई बोली– चुप।

सेठ बोला– वाक्चातुर्यता दिखाते हुये बोला, सब कार्य चुपचाप ही होगा। मैं किसी को नहीं बोलूँगा।

सुर सुन्दरी का सारा शरीर क्रोध से काँप उठा। उसकी जुबान से पूरे शब्द निकल भी नहीं रहे थे। उसका क्षत्रियत्व जाग उठा, उसकी आँखों से भीषण अग्नि निकलने लगी, आँखें लाल–लाल हो गई।

वह बोली– 'चाण्डाल'। जबान बन्द कर, अब अगर एक शब्द भी मुँह से निकाला तो अच्छा नहीं होगा। अब कुछ भी मत बोलना।

सेठ को भी क्रोध आ गया, वह बैठा था, खड़ा हो गया। तमतमाता हुआ सुर सुन्दरी के सामने जाकर खड़ा हो गया। कहने लगा– ''अरे नादान औरत'' तू जानती नहीं, अभी तू मेरे कब्जे में है। तेरा भला इसी मैं हे तू मेरी बन जा। तुझे तो मेरा अहसान मानना चाहिये। मेरी इच्छाओं के सामने तुझे सिर झुकाना चाहिये, झुकाना तो एक तरफ रहा।

उल्टी मेरे ऊपर गुस्सा कर रही है। मेरे अनुसार चलेगी तो सुखी रहेगी। जो तुझे छोड़कर चला गया है उसे तो अब तू भूल जा। अब वो आयेगा भी तो कहा ढूँढ़ेगा ! तू उसे नहीं मिलेगी तू भी उसे नहीं ढूँढ़ सकती। इसलिये तू मेरी बात मानले वरना मैं जबरदस्ती अपनी इच्छा पूर्ण करूँगा।

सुर सुन्दरी ने कहा– पापी, सोती हुई सिंहनी को मत जगा, नहीं तो वो तेरा नामोनिशान मिटा देगी। अपनी मौत को आमंत्रण मत दे, मैं पतिव्रता क्षत्राणी हूँ। मैं तेरी देह को मिट्टी में मिला दूँगी। सावधान हो जा।

सेठ बोला– वाह ! ये कोमल हाथ मुझे मिट्टी में मिलायेंगे, मैं भी तो यही चाहता हूँ, तू मुझे कुचल।

सुर सुन्दरी ! ये सब व्यर्थ की बातें मत कर, यहाँ तू कितनी भी चिल्ला, कोई तेरी आवाज सुनने वाला नहीं है। मेरे बलशाली हाथों से कोई बचाने वाला नहीं है। चिल्ला तू कितना चिल्ला सकती है।

सुर सुन्दरी ने अपने पास में छुरी छुपा रखी थी। उसने देखा कि ये दुष्ट ऐसे नहीं मानने वाला है, उसने छुरी निकाली और बोली– अरे दुष्ट एक सती का शील ही उसकी मर्यादा है, ढाल है, धर्म तो उसका कवच है। दानव ये मेरी छुरी ही तेरे बलशाली हाथों से रक्षा करेगी। सावधान ! यदि एक कदम भी आगे बढ़ाया तो अपने को पृथ्वी पे लुढ़कता हुआ पायेगा, धूल चाटेगा।

कटार दिखाती हुई सुर सुन्दरी

सेठ छुरी देखकर डर गया। वह दो कदम पीछे हट गया। धीरे–धीरे हटता गया, कमरे से बाहर निकला और दरवाजे को साँकल लगाकर चला गया और बोला अब देखता हूँ तुझे ? कैसे तू मेरी आज्ञा का अनादर करेगी।

सुर सुन्दरी अकेली रह गई, वह सोचने लगी– मैंने इस दुष्ट के ऊपर विश्वास करके अच्छा नहीं किया, अब क्या करूँ ? हे परमात्मा ! मेरे शील की रक्षा करो। मुझ अबला को शरण दो।

हे नाथ ! इस संसार के पुरुष कितने गिरे हुए हैं, विश्वासघातक हैं। माता, बहन, बेटी का रिश्ता केवल नाम का है।

प्रतिज्ञा करके भी जो भूल जाते हैं, धर्म का जिन्हें कुछ भी भान नहीं है। धिक्कार है ऐसे पुरुषों को। इससे तो विषधर ही अच्छा है। वह कभी विश्वासघात तो नहीं करता है। वह किसी को खाता तो नहीं है। हाँ, मैं अगर आत्म हत्या कर लेती हूँ तो अपने शील की रक्षा भी कर लूँगी। परन्तु आत्महत्या करना तो पाप है। आत्महत्या से तो मेरी ही दुर्गति हो जायेगी। मैं मरने के विचार से ही काँप सही हूँ। हे भगवान ! रास्ता बताओ, मैं कैसे क्या करूँ ? वह हाथ में कटार लेकर जोर–जोर से घूमने लगी। उसने सोचा मेरा शील धरम बच जाय, ये पापी तो मेरे मृतक शरीर को भी हाथ ना लगाये, आत्मघात पाप है परन्तु शील की रक्षा करना भी जरूरी है, मैं आत्मघात नहीं करूँगी तो शील बचना मुश्किल हो जायेगा।

ये जीवन जाय तो कोई बात नहीं, पतिदेव भी नहीं मिलेंगे, माता–पिता भी अब नहीं मिलेंगे। सात कौड़ियों में राज्य प्राप्त करके पतिदेव को नहीं बता सकती, ये सब अभिलाषा एक तरफ, अभी तो केवल मुझे अपना शील अखण्ड रखना है, शील बचाना है, शील की रक्षा करना है।

देखिये, सुर सुन्दरी के अन्दर शील को बचाने की कितनी भावना थी। आज किसी स्त्री का पति स्वर्गवासी हो जाता है तो, 15 दिन नहीं होते हैं और दूसरी शादी कर लेती है। कई बार तो पति का दाह–संस्कार भी नहीं होता है और पत्नी दूसरे घर में विवाह करने की सोच लेती है।

जिनका मन और इन्द्रियों पर कन्ट्रोल नहीं है, ऐसी नारियाँ ही अपने पति को भूलकर दूसरा विवाह कर लेती है। जो अपने शील को सर्वस्व समझते हैं उनकी रक्षा स्वर्गों के देव भी आकर करते हैं।

सुन्दरी को उस कक्ष में एक खिड़की दिखाई दी, उसने खोली तो वह समुद्र में ही खुल रही थी। ये रास्ता मिल गया, यहाँ से कोई दिखाई भी नहीं दे रहा है। स्वयं सेठ ही बाहर से दरवाजा बन्द कर गया है। मुझे समुद्र में कूद जाना चाहिये।

सुर सुन्दरी ने णमोकार मंत्र पड़ा और अथाह समुद्र में कूद गई। भारत में कितनी नारियों ने अपने सतीत्व को बचाने के लिये पुरुषों के कारण आत्महत्या करली। कभी–कभी नारी की सुन्दरता ही नारी के लिये दुःख का कारण बन जाती है। कामी व्यक्ति केवल नारी के रूप पर ही मोहित होता है, चमड़ी के लिये ही नारी को परेशान करता है। इसलिये अपने शील को बचाने के लिये अधिक श्रृंगार नहीं करना चाहिये, वस्त्र से तन ढ़ाककर रहना चाहिये, अच्छे वस्त्र धारण करना चाहिये, श्रृंगार से भी अधिक है हमारी वेशभूषा, आज की वेशभूषा तो बहुत ही इंसान को भटका रही है। माता–पिता का दायित्व है कि वो अपनी बेटी को अच्छे सलीके के वस्त्र पहनावे, जिन वस्त्रों से हमारा तन ना ढ़के ऐसे आधे–अधुरे वस्त्र नहीं पहनना चाहिये। शर्म आँख में होना चाहिये, कोई वस्त्र आढ़े–टेढ़े पहनने से सुन्दरता नहीं बढ़ती बल्कि सुन्दरता घट जाती है। दिखाने के लिये सबसे हटकर वस्त्र धारण करते हैं। दिखावे की भावना ही शील का हरण करने में कारण बनती है।

सेठ थोड़ी देर बाद में अपने चार–पाँच नौकरों के साथ दरवाजा खोलने आया, जब दरवाजा खोलकर देखा तो वहाँ सुर–सुन्दरी नहीं थी। उसने चारों तरफ देखा, पूरे कमरे को अच्छे से देखा परन्तु उसे कहीं भी सुर सुन्दरी दिखाई नहीं दी। उसने खिड़की खुली हुई देखी तो वह समझ गया। सेठ बोला– वह सुन्दरी समुद्र में कूद गई। उसने नाविकों को कहा– भाई एक सुन्दरी समुद्र में गिर गई है उसकी रक्षा करो, उसे शीघ्र बचाओ।

नाविक ने नौका समुद्र में उतारी, नौका उतारते ही जोर से हवा चलने लगी, इतनी तेज आँधी आ गई, समुद्र में ऊँची–ऊँची तरंगे उठने लगी।

ऐसे तेज तूफान में नाव स्थिर नहीं रह सकी। नाव क्या जहाज भी स्थिर नहीं हुआ, नाव और जहाज सभी पानी में डुब गये। पापी सेठ को उसकी करनी का फल तुरन्त मिल गया। उस सेठ के कारण बहुत सारे निरपराधी लोग मारे गये।

समुद्र में कूदती सुन्दरी

सुर सुन्दरी ने मरने के लिये समुद्र में छलांग लगाई थी। परन्तु उसकी आयु अभी बाकी थी। उसे अभी तो बहुत दुःखों का सामना करना है, इसी भव में बहुत धूप छाप देखना है। वह जैसे ही पानी में कूदी उसे टूटे हुये जहाज की लकड़ी का पटिया हाथ में आ गया। समुद्र के तेज बहाव में वह उस लकड़ी के पाटे के सहारे तैरने लगी। समुद्र में दूर–दूर तक किनारा नहीं दिख रहा था।

तैरते–तैरते उसके हाथ–पैर थक गये, कोई भी व्यक्ति पानी में भूखा–प्यासा अधिक समय नहीं तैर सकता। वह अपने शील को बचाने के लिये और स्वामी ने जो शर्त रखी उसे पूरा करने के लिये तैर रही थी। उसके शरीर की शक्ति तो क्षीण हो गई थी परन्तु मन की शक्ति बहुत मजबूत थी। आखिर वह एक वीरांगना जो थी। व्यक्ति का किसी भी परिस्थिति में मनोबल नहीं टूटना चाहिये, मनोबल के सहारे वह कठिन से कठिन कष्ट को भी सह लेता है। घबराता नहीं है। मन में आशा का दीप जब तक जलता है तब तक वह हार नहीं सकता, उसकी जीत अवश्य होती है। उसने एक ही लक्ष्य बनाया अब तो कैसे भी अपने जीवन को बचाना है और स्वामी की बाँधी हुई सात कौड़ियों में राज्य पाना है।

उसके पल्ले में सात कौड़ियाँ अभी भी बँधी हुई थी। इन सात कौड़ियों से राज्य प्राप्त करके स्वामी के दर्शन करूँगी।

छट्टा सर्ग

सुर सुन्दरी में जब तक ताकत थी तब तक हाथ–पैर हिलाती रही, वह अत्यन्त थक गई थी। हाथ–पैर हिलाती हुई मूर्च्छित हो गई, मूर्च्छित अवस्था में वह लकड़ी के सहारे पानी के तेज बहाव में बह रही थी।

समुद्र में और भी कई व्यापारी जहाज से अलग–अलग स्थानों पर जा रहे थे। एक जहाज के पास वह सुर सुन्दरी बहती हुई निकली तब उस जहाज में बैठे एक सेठ की नजर उस पर पड़ी। उसने अपने नौकरों को शीघ्र बुलाया। उनको कहा शीघ्र उस स्त्री को बचाओ। सेठ के सेवक समुद्र में डुबकी लगाकर उसको निकालकर लाये। उस सेठ के साथ में वैद्य भी था। सेठ ने वैद्य को बुलाया और उसकी नाड़ी देखने को कहा। वैद्य ने नाड़ी देखकर कहा– ये अभी मरी नहीं है। इसे बचाया जा सकता है।

सेठ ने दासियों से कहा– इसे सुखे कपड़े पहनाओ, उसकी आज्ञानुसार दासियों ने सुर सुन्दरी को सुखे वस्त्र पहना दिये। वैद्य ने कुछ औषधि दी, औषध ने अपना काम किया, उसे तुरन्त ही होश आ गया।

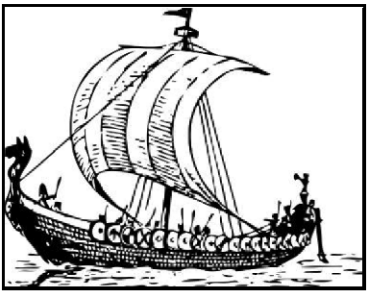

जहाज में बैठी हुई सुन्दरी और महिलायें

आँखें खोली तो अपने आपको जहाज के सुन्दर कमरे में देखकर वह उठ बैठी, अपरिचित लोगों को पास बैठा हुआ देखकर बोली– आप लोग कौन है ? और मैं कहा हूँ ? मुझे यहाँ कौन लाया है ?

दासियों ने कहा– बहन, चिंता मत करो। आप सुरक्षित स्थान पर हो।

सुर सुन्दरी आँखें बन्द करके बैठ गई। उसे सब कुछ याद आ गया। मैं तो सेठ से अपने शील बचाने के लिये समुद्र में कूदी थी।

मैं तो समुद्र में लकड़ी के सहारे तैर रही थी। हे भगवान ! ये सब क्या हो गया ? मुझे क्यों बचाया, मैं तो मर जाती तो अच्छा होता।

एक दासी ने कहा– बहन ! हमारे मालिक ने आपको समुद्र से निकलवाया है। हमारे मालिक बहुत अच्छे है। समुद्र में जहाज चल रहा था, सूर्य भी धीरे–धीरे अस्ताचल की ओर बढ़ गया। सुर सुन्दरी अपने आपको स्वस्थ महसूस करने लगी, वह प्रसन्नचित्त होकर अपने द्वारा किये अपराधों की आलोचना करने के लिये बैठ गई। वह प्रभु को नमस्कार करके नौ बार णमोकार मंत्र पढ़कर प्रतिक्रमण करने लगी। उसी समय जहाज का स्वामी उसकी आवाज सुनकर उसके कक्ष में आया।

वह बोला– सुन्दरी, इतनी छोटी उम्र में ये धरम का क्या काम है। मनुष्य जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है, उसमें भी सुन्दर शरीर और कठिनाई से प्राप्त होता है। ऐसे जन्म को पाकर उदासीन नहीं होना चाहिये, अपने सुन्दर शरीर का भरपूर उपयोग करना चाहिये, दरिद्र की भाँति कैदी के समान इस जन्म को नहीं गँवाना चाहिये।

अपने जीवन को आनंद उल्लास व भोग से आमोद–प्रमोद करो। प्रतिक्रमण तो पाप करने के बाद में किया जाता है। जब इन्द्रियाँ शिथिल हो जाये, भोगों से मन भर जाये, जीवन समाप्त होने का समय आ जाय तब प्रतिक्रमण करना चाहिये। अभी नहीं ! अभी तो तुम्हारे ऊपर पाप का मैल ही नहीं चढ़ा है, फिर अभी प्रतिक्रमण क्यों कर रही हो।

सुर सुन्दरी ने कहा– श्रावक हो या साधु उसे नियम से दो समय तो प्रतिक्रमण करना ही चाहिये। हर जीव से राग–द्वेष, मन, वचन, काय, क्रोध, मान, माया, लोभादि कषायों के निमित्त से अनेक पाप होते हैं। उन पापों से मुक्त होने के लिये प्रायश्चित स्वरूप सभी को प्रतिक्रमण करना चाहिये।

हम प्रतिक्रमण के साथ पश्चात्ताप, निंदा व गर्हा कर लेते हैं तो पापों से मुक्त हो जाते हैं। पाप कर्मों का ब्याज हमारे ऊपर नहीं चढ़ता है। जैसे कोई व्यक्ति किसी से कोई सामान उधार लेता है और एक–दो घंटे में या एक–दो दिन के अन्दर अथवा समय सीमा के अन्दर पैसा दे देता है तो उसके ऊपर अलग से ब्याज नहीं लगता है।

वह कर्जे के ब्याज से बच जाता है, उसी तरह 24 घंटे में किये गये पापों से मुक्ति पाने के लिये दो समय प्रतिक्रमण करने से पाप से बच जाते हैं।

सेठ ने कहा– अरे सुन्दरी ! धर्म की बात छोड़ो अभी जीवन का आनंद लो।

सुर सुन्दरी ने कहा– मुझे तुम्हारा उपदेश नहीं सुनना है।

सेठ ने कहा– मेरी आज्ञा तो सुनोगी।

सुर सुन्दरी बोली– कुछ भी नहीं।

सेठ बोला– मैंने दया करके तुम्हारे प्राण बचाये उसका ये नतीजा, बड़ी घमण्डी हो तुम, मुझे ऐसा पता होता तो मैं तुमको नहीं बचाता। मैंने तुमसे इतनी छोटी सी चीज माँगी है वो भी तेरे प्राण बचाने के बदले में, वह भी नहीं दे सकती।

सुर सुन्दरी जोर से चिल्लाई– जिसके कारण स्त्री का गौरव बढ़ता है, वह समाज में इज्जत का जीवन जीती है, जिससे वह अपने घर को स्वर्ग बनाती है, जिसे लक्ष्मी कहा जाता है, स्त्री देवी का रूप है, जिसके कारण सारा संसार झुकता है, जिसके प्रभाव से स्त्री की महिमा बढ़ जाती है, देव भी जिस शील की स्वर्ग से आकर पूजा करते हैं। ऐसे मेरे पति की धरोवर को चाहता है। उसी सतीत्व को माँग रहा है। धिक्कार है तुझे। जीवन बचाने वाला तो पिता व भाई के समान होता है।

सेठ चिल्लाया– सुन्दरी ! सोच ले तू सीधे से मेरी बात नहीं मानी तो मुझे टेढ़ा होना भी आता है। मैं बल प्रयोग करूँगा, तुझे अवश्य अपना बनाऊँगा।

सुर सुन्दरी हँसकर बोली– पुरुषों को अपने बल का बहुत घमण्ड होता है। विश्वासघाती ! बल का घमण्ड मत कर, ये घमण्ड ही तेरा सर्वनाश कर देगा।

रावण ने सीता सती पर अपना बल अजमाया था, उसके पूरे कुटुम्ब का नाश हो गया। द्रौपदी का जिसने चीर हरा उन कौरवों का नामोनिशान मिट गया। कीचक ने सैंध्री का शील हरने का प्रयास किया, वह खुद मिट गया। अभी थोड़े दिन पहले की बात है। एक सेठ ने मेरे शील को हरने की कोशिश की, जानते हो वह जहाज के साथ समुद्र में डूब गया। हमेशा के लिये मिट गया, पानी में विलीन हो गया। अब तुम्हारा नम्बर है। तुम अपनी कोशिश करके देखलो, इसका जब परिणाम सामने आयेगा तब पछताओगे।

सुर सुन्दरी की बात सुनकर वह भी डर गया। उसके शील के प्रभाव को सहन करने में असमर्थ हो गया है। वह मन ही मन सोचने लगा अब क्या करूँ ? कुछ सोचकर इसे जवाब दूँगा। ठीक है सुन्दरी अभी तो मैं जा रहा हूँ। तुम भी और सोच लो, मैं तुमको सोचने का समय देता हूँ।

सेठ अपने कमरे में आकर इधर से उधर टहलने लगा। ये लड़की मेरे वश में नहीं होने वाली, इसे तो बाजार में कहीं बेच देता हूँ। यह नवयौवना है सुन्दर है, इसको बेचने पर कीमत भी अच्छी मिलेगी। ये मेरी नहीं हुई इसलिये अब तो ऐसी जगह बेचूँगा जहाँ इसका हजारों लोग शील हरने आयेंगे।

सुन्दरी ! तू मेरी नहीं हुई, अब देख तुझे मुझसे भी कितने अधिक खतरनाक लोग मिलेंगे। कल सुबह ही इसे बेच दूँगा। क्या युक्ति मेरे दिमाग में आई है। मैं इसे दुःखी करूँगा तभी मेरी आत्मा को शांति का अनुभव होगा।

सातवाँ सर्ग

सेठ हमेशा इसी रास्ते से व्यापार के लिये आता–जाता था, उसे सब कुछ पता था। कौन से शहर में किसका व्यापार होता है। वह सेठ अपने कक्ष में घूम रहा था, तभी उसे एक गाँव का नाम याद आया, उस गाँव में एक वेश्या रहती थी। वह सुन्दर कन्याओं का मुँहमाँगा दाम दे देती थी। जब सेठ का जहाज उस गाँव के पास पहुँचा तो उसने जहाज वही रोकने के लिये कहा। वह जहाज रोककर सुर सुन्दरी के पास में आया और बोला सुन्दरी– इस सोवनकुल गाँव का मनोरम दृश्य देखने चलो।

सुर सुन्दरी उसके साथ में गाँव में गई वह सोचती जा रही थी, अब ये दुष्ट मुझे कहाँ लेकर जा रहा है। इसकी नीयत साफ नहीं लगती, मेरे भाग्य में भी क्या लिखा है ? मैं भी नहीं जान सकती, किस्मत अच्छी होती तो मेरे पतिदेव ऐसे छोड़कर नहीं जाते। जाती हूँ जहाँ भाग्य ले जायेगा वहीं मुझे जाना है। वैसे भी मैं सबके लिये अनजान हूँ। मैं कहाँ जाऊँगी, मुझे कुछ भी जानकारी नहीं है। हे प्रभु ! यहाँ कोई मन्दिर मिल जाये जहाँ मैं अपने शील को ऐसे दुष्ट लोगों से बचा सकूँ। हे प्रभु ! मेरी सहायता करो। होनी बड़ी बलवान होती है। किस्मत में जो लिखा है, उसे कोई टाल नहीं सकता। भाग्य को क्या मंजूर है, यह सामान्य व्यक्ति नहीं जान सकता। एक केवलज्ञानी भगवान ही जानते हैं।

वह सोवनकुल व्यसनी लोगों के रहने का स्थान था। इस गाँव में सब दुष्ट दुराचारी लोग रहते थे। सेठ भी सुर सुन्दरी को इस गाँव की गणिका (वेश्या) के पास ले गया। वेश्या ने सुर सुन्दरी का सुन्दर रूप देखकर उस सेठ को मुँहमाँगी कीमत दे दी।

सुन्दरी को वेश्या के पास बेच दिया

जहाँ के लोगों के पास में धन अधिक होता है, उनका धन ऐसे व्यसनों में ही खर्च होता, जो धन का दुरुपयोग करते हैं। अच्छे काम में धन नहीं लगाते हैं, वे केवल धन को भोगने में खर्च करते हैं।

सुर सुन्दरी को वेश्या के यहाँ आये घंटा भी नहीं हुआ इतने में तो पूरे शहर में उसकी सुन्दरता की चर्चा हो गई। नवयुवक मनचले उसको देखने के लिये वेश्या के घर पर आकर खड़े हो गये। सब उसको देखकर बड़े खुश हो रहे थे। क्या कोहिनूर आया है। सब कह रहे थे, सुन्दरी तुझे तो हमारे लिये ही बनाया है। तुझे देखकर वो आनंद आ रहा है और जब तेरे पास बैठने का अवसर मिलेगा, उसका वर्णन तो हम कर ही नहीं सकते। हर युवक एक ही बात बोल रहा था। एक बार तो तेरा समागम करके रहेंगे। चाहे कितना ही पैसा लगे। तू नहीं मिली तो हमारी जिन्दगी बेकार है। तेरे बिना जीना मृत्यु के समान है।

सुर सुन्दरी सब युवकों को देखकर उनकी गंदी भावना समझ गई। संसार में ऐसे कितने दुष्ट व्यसनी लोग भरे हुये हैं। सबकी गंदी नजरें केवल मेरे ऊपर ही लगी है। वह यही सोचकर आँसू बहाने लगी। हे प्रभु ! ये मेरा भाग्य मुझे कहाँ लेकर आ गया। सती चंदना को तो बाजार से एक सेठ धरम का पिता बनकर ले गया था। हे प्रभु ! मेरी रक्षा करने आज कोई नहीं आयेगा। मैंने ऐसा क्या अपराध किया है। मैंने जो कुछ भी दुष्कर्म किये हो, उनकी मैं क्षमा माँगती हूँ। इस नरक से मुझे बचाओ भगवन्। हे महावीर प्रभु ! आप तो चंदना को मुक्त कराने आहार लेने के लिये आ गये थे। मेरी भी रक्षा करो नाथ।

वेश्या ने सुर सुन्दरी से कहा– इस तरह कब तक रोयेगी ? अपनी उदासी छोड़, संसार के सुखों को भोग, आनंद से रह। दूसरों को आनंद का अनुभव करा।

वेश्या ने पहले तो उपदेश दिया। वेश्या के उपदेश को सुनकर सुर सुन्दरी स्वयं अपने भाग्य को कोसती हुई विचार करने लगी। यह भी कैसी कर्म की माया है, जो जिसको चाहता है, वहाँ भाग्य साथ नहीं देता है। जहाँ भाग्य साथ देता है वहाँ उसे कोई नहीं चाहता है। जो दैव का आदर करता है दैव (भाग्य) उसको उतना ही कष्ट देता है। यह कैसी भाग्य की लीला है।

सुर सुन्दरी ने अपने मन को स्थिर किया उसने सोचा– इस वेश्या से मधुर बोलकर मैं यहाँ से भाग सकती हूँ। वरना तो भागने भी नहीं मिलेगा।

सुर सुन्दरी बोली– माँ, अभी मेरी तबियत ठीक नहीं है, मेरा मन स्थिर नहीं हो रहा है, दिमाग कुछ काम नहीं कर रहा है। मुझे दो–चार दिन एकांत में आराम कर लेने दो।

वेश्या भी 'माँ' शब्द सुनकर पिघल गई। उसने कहा– हाँ बेटी ! तू तो मेरे महल का कोहिनूर हीरा है। तू जी भर के आराम करले, यहाँ तुझे कोई कष्ट नहीं देंगे। मेरा महल बहुत बड़ा है, जहाँ तुझे अच्छा लगे वहाँ जाकर आराम कर।

अब सुर सुन्दरी एकांत में बैठकर सोच रही थी, अब यहाँ से कैसे निकलूँ? कोई रास्ता मिल जाये तो यहाँ से कहीं और भाग जाऊँ। उसी समय उसके उम्र की वेश्या उसके पास आई, उसने जैसे ही सुर सुन्दरी की सुन्दरता देखी तो वह बोली– तू अपनी सुन्दरता से लोगों को अपना बनायेगी और हमारा धंधा चौपट कर देगी। याद रखना हम सब मिलकर तुझे इतना मारेंगे। तुझे यहाँ चैन से नहीं रहने देंगे। तू हमारा सुख–चैन छीनने आई है। हम तेरे सुन्दर रूप को बदसूरत बनाकर रख देंगे।

सुर सुन्दरी ने कहा– नहीं, मैं यहाँ रहने नहीं आई हूँ, मुझे जबरदस्ती इस नरक में डाला गया है। मेरे शरीर में तो इस घर की हवा भी तीर की तरह चुभ रही है।

मुझे तो यहाँ ऐसा लग रहा है मानों मुझे भट्टी में डाल दिया गया हो। मैं तो यहाँ से निकलना चाहती हूँ। मैं निकलने का प्रयत्न कर रही हूँ। आप मुझे यहाँ से निकाल सकती हो तो मेरी मदद करो, मुझे यहाँ से निकाल कर किसी शेर के सामने डाल दोगी तो भी मैं आपका उपकार मानूँगी। सुर सुन्दरी कहती–कहती जोर–जोर से रोने लगी। उस वेश्या ने उससे पूछा तुम अपने रूप के यौवन का लाभ नहीं उठाना चाहती हो।

सुर सुन्दरी बोली– ऐसे रूप को धिक्कार हो जो रूप शील में दोष लगवाये, अनेक कष्ट दिलाये। मैं तो हमेशा के लिये ऐसे रूप को नष्ट करना चाहती हूँ। यदि तुम मेरी मदद करोगी तो तुम्हारा कल्याण होगा, मेरे ऊपर उपकार होगा।

उस युवती को सुर सुन्दरी पर दया आ गई, उसके मन में विचार आया, अच्छा रहेगा ये यहाँ से चली जायेगी तो मेरा अधिकार बना रहेगा, कोई मुझे हटा नहीं सकेगा वरना ये अधिक समय रही तो सब कुछ इसके अधिकार में हो जायेगा। ये मालकिन बन जायेगी, मैं यहाँ की नौकरानी हो जाऊँगी।

वह युवती वेश्या के घर में सबसे अधिक सुन्दर थी। परन्तु सुर सुन्दरी के आगे उसका रूप कुछ भी नहीं था। उस युवती ने कहा– तुमको यहाँ से जाना है ना तुमको मैं भागने का रास्ता बता देती हूँ। तुम आज पिछली रात में तैयार रहना, मैं तुम्हारे जाने का प्रबन्ध कर दूँगी। तुमको यहाँ से दूर पहुँचा दूँगी। तुम किसी को कुछ भी मत बताना। मैं चलती हूँ।

सुर सुन्दरी ने कहा– धन्यवाद बहन, मैं तुम्हारा उपकार जिन्दगी भर नहीं भूलूँगी। जब भी कोई व्यक्ति अकेला बैठता है चाहे वह सुखी हो या दुःखी तब दिमाग में आकाश पाताल की बातें बहुत याद आती है।

नई–नई योजनाएँ दिमाग के भेजे में तैयार होती है, कार्य हो चाहे ना हो परन्तु 'खाली माथा भूतो का डेरा'।

बिना वजह के विचार चलते रहते हैं। ऐसे विचार आते हैं जिनसे कोई संबंध ही नहीं होता है।

सुर सुन्दरी भी आगे की योजना बना रही थी, ना जाने क्या–क्या सोच रही थी। व्यक्ति जितना सोचता है उतना कार्य कभी कर नहीं पाता है। जो नहीं सोचता है, वह कार्य सहज, सरल, अनायास ही हो जाता है। सोचने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। जितना हम सत्कार्य करे उतना अधिक सोचना चाहिये। बुरे काम ना सोचना चाहिये ना ही करना चाहिये।

जिस कक्ष में सुर सुन्दरी विश्राम करने के लिये एकांत में विचारमग्न थी उसी समय अर्द्धरात्रि में किसी ने धीरे से उस कक्ष का दरवाजा खटखटाया। उसने शीघ्र दरवाजा खोला, वह युवती अन्दर आकर उसको सारा रास्ता बताने लगी। तुमको अगर अपनी रक्षा करना है तो मैं ये बड़ा रस्सा लेकर आई हूँ। तुम इसके सहारे नीचे उतर जाओ, सामने के द्वार से तुम नहीं जा सकती इसलिये गली के पीछे वाले द्वार से निकल जाना, गली के बाहर नाके पर एक रथ वाला मिलेगा, उसमें तुम बैठ जाना, वो तुमको उजाला होने के पहले सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देगा।

सुर सुन्दरी बड़ी प्रसन्न हुई। उसने कहा जो रास्ता आप बता रही हैं। मैं उसी रास्ते से जाऊँगी। मैं अभी तुम्हारे सामने ही रस्सी के सहारे नीचे उतर जाती हूँ।

सुर सुन्दरी ने रस्सी को खिड़की की लकड़ी से मजबूत बाँधा और णमोकार मंत्र बोलकर धीरे से नीचे उतर गई। गली के बाहर एक रथ खड़ा था वह उस रथ में बैठ गई। युवती बड़ी प्रसन्न हुई। अच्छा हुआ ये बला यहाँ से टल गई, वो अगर यहाँ रह जाती तो मेरा तो धंधा ही चौपट हो जाता।

सुर सुन्दरी खुशी–खुशी युवती को धन्यवाद देती हुई रथ में सवार हो गई। हे प्रभु ! अब मैं सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाऊँ। मेरी रक्षा करना।

सारथी ने रथ तीव्र गति से चलाना शुरू किया, जब सूर्य की कुछ लालिमा आने लगी तब तक रथ शहर से बहुत दूर जंगल में पहुँच गया। सारथी ने रथ को जंगल में खड़ा कर दिया। नीचे उतरकर पीछे आया और सुर सुन्दरी से बोला– नीचे आ जाओ, देखों मैं तुमको शहर से कितनी दूर लेकर आ गया हूँ। थोड़ा–थोड़ा उजाला भी हो गया है।

सुर सुन्दरी रथ से नीचे उतरकर आई। उसने पास में काले कलूटे मोटे आदमी को खड़ा देखा तो वह भयभीत होकर काँपने लगी। एकटक उसकी ओर देखती रही। सारथी भी सुर सुन्दरी की सुन्दरता देखकर मोहित हो गया। अरे ये क्या ? ये तो साक्षात् देवी का रूप है, इतनी सुन्दर स्त्री तो मैंने आज तक कहीं नहीं देखी। वह बोला– तुम डरो मत, मुझे तो तुमको मारने के लिये कहा था, परन्तु मैं तुमको मारूँगा नहीं। मैं तो तुमको अपने दिल की रानी बनाऊँगा। चलो रथ में बैठ जाओ, मेरा मकान यहीं पास में ही है। मैं तुमको अपने घर ले चलता हूँ। आओ रथ में चढ़ो।

सुर सुन्दरी बोली– 'अच्छा' इतना कहकर वह रथ के पीछे गई और समुद्र की तरफ भागी। सारथी को जब सुन्दरी भागती हुई दिखी तो वह भी उसे पकड़ने को दौड़ा, वह उसे पकड़ने ही वाला था कि उसको ठोकर लगी और वहीं पत्थर पर गिर पड़ा।

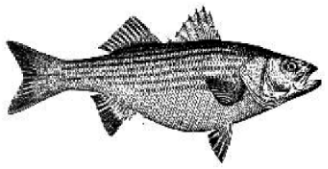

मछली ने सुर सुन्दरी को निगल लिया

सुर सुन्दरी एक ऊँची चट्टान पर चढ़ गई। सारथी उठकर फिर से दौड़ने लगा। वह भी चट्टान पर पहुँच गया। इतने में सुर सुन्दरी उसको आते हुये देखकर णमोकार मंत्र पढ़कर समुद्र में कुद गई। वह जिस स्थान पर कुदी थी वहाँ हजारों बड़ी–बड़ी मछलियाँ, मगर तैर रहे थे। उसको कुदते ही एक मछली ने मुँह में निगल लिया।

एक शील को बचाने के लिए वह दो बार समुद्र में कूद गई। कर्म भी जीव को क्या–क्या खेल दिखाते हैं। जिस मत्स्य ने सुर सुन्दरी को निगला था वही मत्स्य एक धीवर के जाल में थोड़ी देर बाद में फँस गया। धीवर ने जब उस मत्स्य का पेट चीरा तो उसके पेट में से सुर सुन्दरी मूर्च्छित अवस्था में बाहर निकली। धीवर की पत्नी ने उसकी मूर्च्छा दूर करी। धीवर ने अति सुन्दर कन्या देखकर सोचा मैं इसे अपने राजा के पास भेंट करूँगा तो वो मुझे बहुत बड़ा इनाम देंगे। यह कन्या तो हमारे महाराज के योग्य है। मैं उनको इसे भेंट कर देता हूँ। धीवर सुर सुन्दरी को राजा के पास ले गया, जाकर प्रणाम किया और सारी बात बताई। महाराज मैं इसे आपको भेंट करने आया हूँ। आप स्वीकार करें। राजा को भी सुर सुन्दरी ने अपनी सारी व्यथा सुनाई। राजा को सुनकर उस पर बहुत दया आई। उसने अपनी दासियों को बुलाया और उसकी समुचित व्यवस्था का आदेश दिया। इसे तुम लोग अंतपुर में ले जाओ। इसका बहुत ख्याल रखना।

सुर सुन्दरी महारानी के कक्ष में गई, महारानी को प्रणाम किया। महारानी को सेविकाओं ने बताया– ये अंतपुर में ही रहेगी, इनको महाराज ने यहाँ भेजा है। पट्टरानी ने जब सुर सुन्दरी का सुन्दर रूप देखा तो उसके मन में ईर्ष्या के भाव जागृत हो गये। अगर ये सुन्दरी यहाँ रही तो मेरा सौभाग्य छीन लेगी। ये मेरा स्थान प्राप्त कर लेगी, मेरा सुख–चैन नष्ट कर देगी। मेरे प्राणनाथ को अपने वश में कर लेगी। इसे तो स्वामी के आने के पहले ही यहाँ से भगा देना चाहिये। किसी भी तरह से मुझे इसे मेरे रास्ते से हटाना पड़ेगा।

महारानी ने बाहर से प्यार दिखाते हुये सुर सुन्दरी को अपने पास बुलाया। आओ मेरे पास बैठो उसके सिर पर हाथ फेरकर बोली– बहन तुम कौन हो ? तुम्हारा घर परिवार, माता–पिता सब कहाँ है ? यहाँ कैसे आना हुआ?

तुमको देखकर तो ऐसा लगता है, जैसे तुम किसी उच्च घर की लक्ष्मी हो। महारानी की प्यार भरी मधुर वाणी सुनकर सुर सुन्दरी का दिल भर आया। कई दिनों से ऐसे शब्द भी उसे सुनने को नहीं मिले थे।

सुर सुन्दरी की आँख से अश्रुधार बह गई, उसको रोता हुआ देखकर महारानी को उसके ऊपर दया आ गई। महारानी बोली– कितना भोला चेहरा है। महारानी ने अपने आँचल से उसके आँसू पोंछे और कहा– बहन ! तुम अपनी व्यथा मुझे बताओ, मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।

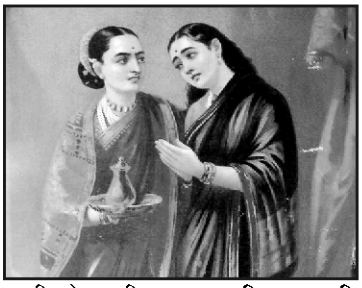
रानी को अपनी व्यथा सुनाती सुर सुन्दरी

सुर सुन्दरी ने अपनी आद्योपांत व्यथा कह सुनाई। सुर सुन्दरी की दुःखभरी कहानी सुनकर महारानी को बहुत दुःख हुआ।

महारानी बोली– बहन ! यहाँ भी तेरा शील नहीं बच सकता। तुम अपना शील बचाना चाहती हो तो जितनी जल्दी यहाँ से जा सकती हो चली जाओ। मैं तुमको यहाँ से बाहर निकाल देती हूँ।

सुर सुन्दरी ने कहा– हाँ महारानी, मुझे जाना है, जल्दी बताइये, मैं कहाँ से बाहर निकलूँ ?

महारानी ने पीछे के रास्ते से अंतःपुर से बाहर जाने का रास्ता बता दिया।

सुर सुन्दरी वहाँ से तीव्र गति से भागी, वह जंगल के रास्ते में दौड़ती जा रही थी। उसको एक भय था अब कोई मुझे रास्ते में पकड़ ना ले उसके पैरों में काँटे चूभ गये, कंकर–पत्थर की ठोकर लग गई। पैरों में खून निकल गया। पैर लहूलुहान हो गये। फिर भी वह आगे बढ़ती ही जा रही थी। उसे ये भी नहीं पता था कि आगे मुझे कहाँ जाना है ?

राजमहल के सुख भोगने वाली सुर सुन्दरी ऐसे कष्टों का सामना कर रही थी, उसके दुःख बढ़ते ही जा रहे थे। कर्म भी जीव को कहाँ से कहाँ पहुँचा देता है। कभी अंदाज भी नहीं लगा सकते।

सुन्दरी चिंतवन भी करती जाती जब कर्मों ने भगवान ऋषभदेव को, पारसनाथ को, महावीर स्वामी को, मर्यादा पुरुषोत्तम राम को, पाण्डवों को, सीता, अंजना, चंदना को नहीं छोड़ा तो मुझे कौन छोड़ेगा। कभी वह दौड़ती, कभी चलती, मुड़कर पीछे देखती कोई पीछे तो नहीं आ रहा। भूखी–प्यासी चलती–चलती वह थककर गिर पड़ी। थकान से वह इतनी दुर्बल हो गई कि उसे अपने तन की भी सुध–बुध नहीं थी। वह गिरते ही मूर्च्छित हो गई।

उसी समय कोई विद्याधर विमान में बैठकर वही से अपने राजमहल में जा रहा था। उसकी दृष्टि नीचे जमीन पर गिरी हुई सुन्दरी पर पड़ी, वह विमान को नीचे लेकर आया। उसने मूर्च्छित सुर सुन्दरी को विमान में लिटा लिया और आकाश मार्ग से महल की तरफ उड़ चला।

विमान में लेटी हुई सुर सुन्दरी

सुर सुन्दरी को जब शीतल हवा लगी तो उसकी मूर्च्छा धीरे–धीरे दूर होने लगी, जैसे ही उसे होश आया उसने आँख खोली और विमान में एक पुरुष को देखकर वह घबरा गई। ये पुरुष मुझे फिर कहीं ले जा रहा है। फिर से आपत्ति आ गई है। अब तो मैं विमान से नीचे कूद जाती हूँ।

वह उठने का प्रयत्न करने लगी। उससे उठा भी नहीं गया। विद्याधर को जैसे ही पता चला उसने कहा– बहन ! अभी तुम उठने का प्रयत्न मत करो, तुम्हारा शरीर बहुत शिथिल हो गया है।

सुर सुन्दरी ने कहा– नहीं ! मैं किसी पुरुष के साथ नहीं जाना चाहती, मुझे नीचे उतार दो, नहीं तो मैं यहीं से कूद पड़ूँगी। मुझे पुरुषों से बहुत नफरत हो गयी है।

विद्याधर ने कहा– बहिन ! तुमको पुरुषों से इतनी घृणा क्यों है ? संसार के सभी पुरुष एक जैसे नहीं होते।

सुर सुन्दरी को गुस्सा आ गया वह बोली– पुरुष बोलते कुछ हैं और करते कुछ हैं। विश्वासघाती, दुराचारी, विधर्मी, प्रतिज्ञा भंग करने वाले, स्त्री का शोषण करने वाले, पुरुषों से जितना दूर रहने मिले उतना ही अच्छा है।

विद्याधर बोला– बहिन ! मैं प्रभु को साक्षी मानकर ये प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हें सगी बहन के सिवा कुछ नहीं समझूँगा, तुम एक बार और विश्वास करो और अपनी सारी कथा मुझे सुनाओ। मैं विश्वासघात नहीं करूँगा। सुर सुन्दरी ने विद्याधर को धर्मात्मा समझकर अपनी सारी कथा सुनाई। सुर सुन्दरी की बात सुनकर विद्याधर की आँखों में भी आँसू आ गये। उसने कहा– बहन ! भय मत करो। अब तुमको दुःख नहीं होगा।

विद्याधर ने सुर सन्दरी से कहा– बहन ये सुमेरु के अकृत्रिम जिनालय हैं। चलो यहाँ दर्शन करते हैं। वह दर्शन करके बड़ी प्रसन्न हुई। हे प्रभु ! कितने दिनों के बाद आपके दर्शन हुये। वहाँ से लौटते समय उन्हें एक मुनिराज दिखाई दिये।

मुनिराज के दर्शन करते हुये

विमान से पुनः नीचे मुनिराज के दर्शन करने उतरे। मुनिराज को दोनों ने नमस्कार किया। उनकी धर्मदेशना सुनी, देशना पूर्ण होने के बाद सुर सुन्दरी ने पूछा– मैं कब अपने पति की आज्ञा का पालन करूँगी और कब मुझे उनके दर्शन होंगे ? कहाँ होंगे ?

मुनिराज ने संक्षेप में उत्तर दिया, बेनाट द्वीप में तुझे तेरा स्वामी मिलेगा। सुर सुन्दरी ने बारम्बार मुनिराज को नमस्कार किया विद्याधर ने भी भक्ति से नमस्कार किया।

विद्याधर ने सुर सुन्दरी से कहा– चलो बहन, अब हमें चलना चाहिये। विमान से शीघ्र ही सुर सुन्दरी विद्याधर के साथ राजमहल में आ गई। उसकी पत्नियों से उसने सुर सुन्दरी का परिचय करवाया। विद्याधर की पत्नियाँ बड़ी प्रसन्न हुई। सब उसका बड़ा ही आदर सम्मान करती थी। सुर सुन्दरी को विद्याधर बहुत अच्छा रखता था। सुर सुन्दरी भी धरम के भाई के पास बड़ी प्रसन्न थी। आनंद से समय बिता रही थी।

विद्याधर ने चार विद्यायें सुर सुन्दरी को सिखा दी। विद्यायें सिद्ध कैसे करते हैं, वह साधना में लग गई। उसे विद्या सिद्ध हो गई।

एक दिन सुर सुन्दरी ने विद्याधर से कहा– भाई, मुझे यहाँ रहते बहुत दिन हो गये हैं। मुनिराज के कहे अनुसार अब मुझे बेनाट द्वीप जाना चाहिये। वहीं मुझे मेरे कार्य में सफलता मिलेगी, आप मुझे वहाँ पहुँचा दीजिये।

विद्याधर ने कहा– बहन ! यह राज तुम्हारा ही है। इसे अपना ही मानो, तुम यही रहो, मैं तुम्हारे स्वामी को खोजकर यही ले आऊँगा, तुम यहाँ से चली गई तो मेरा महल सूना हो जायेगा।

सुर सुन्दरी बोली– भाई, मुझे यहाँ से जाते हुये दुःख होगा परन्तु स्वामी के बिना मैं यहाँ कब तक रहूँगी, उनकी बात को मुझे मेरे बल पर पूर्ण करना है। आप मुझे बैनाट द्वीप में पहुँचा दीजिये।

विद्याधर ने कहा– तुम्हारी जाने की इच्छा है तो मैं तुम्हें पहुँचा देता हूँ। फिर भी एक बार विचार कर लो, यहाँ रहकर भी तुम सब कर सकती हो, परन्तु मुनिराज ने कहा है इसलिये मैं तुमको जबरदस्ती यहाँ नहीं रोकूँगा।

जब तक सुर सुन्दरी के पाप का तीव्र उदय चल रहा था तब तक उसे कहीं भी मुनिराज नहीं मिले और जिनालय के दर्शन भी नहीं हुये।

पुरुष के रूप में सुर-सुन्दरी

आठवाँ सर्ग

विद्याधर ने सुर सुन्दरी को बैनाट द्वीप में पहुँचा दिया। वहाँ पहुँच कर सुर सुन्दरी ने विद्या के बल से रूप परिवर्तित कर लिया, पुरुष बनकर वह वहाँ रहने लगी। उसने अपना नाम 'विमलवाहन' रख लिया। उसने वहाँ सात कौड़ियों के चने खरीदे।

चने लेकर वह शहर के बाहर बेचने के लिये बैठ गई। पहले दिन उसे तीन कौड़ियों का मुनाफा हुआ। दूसरे दिन फिर चने लेकर बैठी तो उसे पाँच कौड़ियों का मुनाफा हुआ। धीरे-धीरे उसका व्यापार बढ़ने लगा। उसने चने के साथ एक पानी का मटका भी भरकर रख लिया। गरमी का मौसम था। लकड़हारे जंगल से लकड़ियाँ काँटकर वहाँ से निकलते थे, जहाँ विमलवाहन चने बेचता था, लकड़हारे थोड़ी देर विश्राम करने के लिये अपने सिर का बोझ वहाँ उतारकर रखते, ठण्डा पानी पीते, सिके चने खाते। लकड़हारे पानी और चने के बदले उसे एक लकड़ी दे देते। बहुत सारे लकड़हारे वहाँ से निकलते थे। सब वहाँ पानी चने लेकर ही आगे बढ़ते थे। उसकी दुकान में एक-एक लकड़ी का ढ़ेर बढ़ते-बढ़ते शाम तक बहुत बड़ा गट्ठा हो जाता था।

विमलवाहन लकड़ी बेचता हुआ

वह लकड़ी का व्यापार भी करने लगा। उन्हीं लकड़हारों से कम कीमत में सबकी लकड़ियाँ खरीद लेता और शाम को गाड़ियों में लकड़ियाँ भरकर शहर की दुकान में बेचने भेज देता।

उसका लकड़ी का व्यापार अच्छा बढ़ गया। सब लोग विमलवाहन को जानने लगे। धनवानों की श्रेणी में उसका नाम आने लगा। वहाँ उसने अपना अच्छा मकान बना लिया। कारोबार दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा था। वहाँ रहते हुये उसे तीन–चार साल हो गये। सब लोगों से उसकी अच्छी पहचान हो गई।

एक दिन कहीं से एक चोर आया जो कि विद्या के बल से चोरियाँ करता था। वह चोर भी उस शहर में बड़ी–बड़ी चोरियाँ करने लगा। सब लोग उस चोर की चोरी से परेशान हो गये। क्योंकि चोर किसी को भी दिखाई नहीं देता था। सारे राजा के सैनिक भी उसे पकड़ नहीं पाये। सब लोग हा–हाकार करने लगे। सबको उस चोर से बड़ा ही भय लगने लगा। पता नहीं कब किसके घर का सारा सामान चोरी हो जाता, लोग राजा के पास रोते–बिलखते जाते; परन्तु राजा स्वयं चोर को पकड़ने में असमर्थ था। उस चोर का हौंसला बढ़ता ही गया। वह एक दिन राजमहल में चोरी करने चला गया, राजकुमारी को उसने चुरा लिया। जब राजकुमारी को कोई भी सैनिक नहीं ढूँढ़ सके तब राजा ने घोषणा करवाई। जो भी मेरी बेटी राजकुमारी को ढूँढ़कर लायेगा उसे आधा राज्य और राजकुमारी का विवाह भी उसके साथ कर दिया जायेगा।

कितने ही लोगों ने चोर को पकड़ने का प्रयास किया, किसी को भी सफलता नहीं मिली। जब विमलवाहन ने घोषणा सुनी तो उसने भी चोर को पकड़ने का बीड़ा उठाया। उसके पास में चार विद्यायें थी। एकरूप परिवर्तिनी, दूसरी परविद्याहारिणी, तीसरी रातहस्ती बलदायिनी और चौथी अदृश्यकारिणी, प्रथम विद्या से तो पहले ही रूप परिवर्तित कर लिया था। उसने अन्य तीन विद्याओं का स्मरण किया। विद्यायें उसके पास आ गई। उनके आते ही वह चोर को पकड़ने चला गया।

विमलवाहन चोर के गुप्त स्थान में अदृश्यकारिणी विद्या द्वारा अदृश्य होकर पहुँच गया। वहाँ उसने चोर को कैद (पकड़ लिया) कर लिया राजकुमारी को तथा चोर को राजा के सामने उपस्थित कर दिया।

विमलवाहन एवं राजकुमारी का विवाह

राजा विमलवाहन को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने विमलवाहन के साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया और घोषणा के अनुसार आधा राज्य भी दे दिया।

राजा और प्रजा दरबार में

विमलवाहन ने राज्य का संचालन करना प्रारम्भ कर दिया। सबसे पहले बंदरगाह का प्रबंध किया। उसने आज्ञा दे दी कि सभी जहाज के स्वामी हमारे सामने उपस्थित किये जायें। पहले हमारे पास उनको लाया जाये, उनसे कर वसूल किया जाये। हमारे पास आये बिना कोई भी यहाँ से नहीं जाये। ये सबके लिये हमारा आदेश है।

राजा विमलवाहन के अनुसार ही सारा कार्य चलता रहा समय बीत रहा था। राजा विमलवाहन अपनी प्रजा का बहुत ध्यान रखता था। हर क्षेत्र में राजा के बराबर कार्य कर रहा था। सब लोगों को नये राजा के साथ बहुत ही आनंद का अनुभव हो रहा था। हर रोज वहाँ पर समुद्र के किनारे जहाज आकर रुकते थे। हर जहाज का स्वामी राजा विमलवाहन से भेंट करता था। राजा भी उनका यथायोग्य सम्मान करता था।

एक दिन बहुत सारे व्यापारियों के साथ अमरकुमार का जहाज भी बेनाट द्वीप के किनारे आ गया। सैनिकों को कर देने के बाद वे लोग अपने शहर की तरफ जाने लगे तो सैनिकों ने अमरकुमार को और साथियों को रोक दिया। आपको ऐसे ही जाने नहीं मिलेगा। आप सब लोग पहले हमारे नये महाराज को सलाम करने चलें, उनसे मिलकर ही जाने मिलेगा।

अमरकुमार ने अपने साथियों से कहा– चलो मित्रों, पहले यहाँ के राजा से और मिल लें, फिर और कार्य करेंगे। जैसे ही अमरकुमार राजसभा में आया तो राजा विमलवाहन उसे देखकर चौंक गया। ओह ! ये क्या ये तो वही चेहरा है, कैसा सूख गया है, गाल चिपक गये हैं, आँखें अन्दर घुस गई हैं। चेहरे पर उदासी छा गई है, जो चमक पहले थी, अब नहीं। क्या ये ही मेरे स्वामी हैं, ये मुख अमरकुमार का ही है। जो मेरे सामने खड़े हैं वो मेरे ही प्राणनाथ हैं। नहीं–नहीं, अभी मुझे धैर्य रखना चाहिये।

अमरकुमार के मन में भी एक आन्दोलन चल रहा था। यह मुख तो बिल्कुल मेरी प्रिया जैसा है, आँखें ललाट, मन्द मुस्कान, नासिका सब कुछ वही लग रही है परन्तु ये कैसे हो सकता है। ये तो पुरुष है। ओह ! मैंने तो उसे ऐसे स्थान पर छोड़ा था। जहाँ अब वो जीवित भी है या नहीं, उसे तो वहाँ रहने वाला राक्षस ही खा गया होगा।

मैंने कैसा जघन्य अपराध किया है। हे भगवान! इस भयानक पाप से कैसे छुटकारा मिलेगा। अमरकुमार की आँखों से दो चार आँसू भी टपक गये। विमलवाहन ने उसे देख लिया।

रोता हुआ अमरकुमार

विमलवाहन यह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि यह अमरकुमार है या और कोई ?

विमलवाहन ने सभा विसर्जित करा दी, मुझे एकांत चाहिये। सब लोग वहाँ से चले गये जब अमरकुमार भी जाने को खड़ा हुआ था। उसे विमलवाहन ने पुनः बैठने का इशारा किया।

राजाज्ञा पाकर अमरकुमार बैठ गया।

विमलवाहन ने अमरकुमार से पूछा– आप कहाँ के रहने वाले हैं ? आपका मुख ऐसा उदास क्यों हो रहा है ?

अमरकुमार के हृदय में राजा के प्रश्न तीर के समान चुभ रहे थे। अब मैं राजा को क्या जवाब दूँ। जो मेरे जीवन का स्वप्न थी, मैंने अपने हृदय को पत्थर बनाकर अपनी जिन्दगी को श्मशान बना लिया है। मैं क्या बताऊँ और क्या नहीं बताऊँ ? मैं तो अपनी पत्नी को राक्षस का आहार बनने के लिये छोड़ आया था। अब मैं जा रहा हूँ। मैं जब 12 साल पहले आया था तब मेरी पत्नी मेरे साथ थी, अब जा रहा हूँ तो मेरे साथ में नहीं है। मैं महाराज को क्या बोलूँ ? इनको बोलूँगा तो ये मुझे दण्ड देंगे।

विमलवाहन ने फिर से पूछा– स्वयं महाराज का मन भी ठीक से काम नहीं कर रहा था, परन्तु अपने मन को जैसे–तैसे स्थिर करके जबरदस्ती अमरकुमार से बार–बार पूछ रहे थे। बोलो सेठ– कुछ तो बोलो, तुम्हारा मुख इतना मलिन क्यों हो रहा है। तुम्हारे मन में कुछ तो है जो तुम मुझसे छिपा रहे हो, तुम मुझे अपना दुःख बताओ। यदि हो सका तो मैं तुम्हारी कुछ मदद भी करूँगा। तुम मुझे अपना मित्र समझो। मैं तुम्हारे दुःख को मिटाने का प्रयास करूँगा।

लेकिन अमरकुमार की आवाज भी नहीं निकल रही थी। वह बोला– असंभव है महाराज ! असंभव, जो मैं बोलूँगा वह कार्य होना असंभव है। मेरे दुःख का कारण अब मिटना असंभव है।

कर्म की कैसी विडम्बना है। आज पत्नी पुरुष के रूप में राजा बनकर पति का सामना कर रही है परन्तु पति अपनी पत्नी को नहीं पहचान पा रहा है।

रोते हुये हिम्मत करके अमरकुमार बोला– महाराज मैं आपको क्या बताऊँ ? मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है। मैं अपने घर से अपनी पत्नी को भी साथ में लेकर आया और पहले ही टापू पर मैं उसे नरभक्षी राक्षस के उद्यान में मरने के लिये छोड़ आया हूँ। मेरी प्राणप्यारी, जीवन की ज्योति सुर सुन्दरी। सुन्दर मुख वाली, आज्ञाकारिणी, गुणवान, धर्मात्मा, रिपुमर्दन राजा की राजदुलारी, सेठ धनावह की पुत्रवधू, मेरी प्रिया, अब मुझे कभी नहीं मिलेगी। उसे राक्षस खा गया होगा, वो मुझे हमेशा के लिये छोड़कर चली गई है। महाराज, उसका मिलना असंभव है। सर्वथा असंभव है। इतना बोलकर अमरकुमार जोर–जोर से रोने लगा।

विमलवाहन को अमरकुमार की बातें सुनकर बड़ा दुःख हुआ, उसे विश्वास हो गया कि स्वामी मुझे अभी भी उतना ही चाहते हैं। विमलवाहन तो अमरकुमार को पहचान गया था; परन्तु अमरकुमार राजा को नहीं पहचान पाये कि ये ही राजा के रूप में मेरी सुर सुन्दरी है।

विमलवाहन अपनी पहचान बताने दूसरे कक्ष में चला गया। थोड़ी देर में पुनः अपने रूप को परिवर्तित करके यह बोलती हुई उस कक्ष में आई जहाँ अमरकुमार बैठा था। संसार में कोई भी कार्य असंभव नहीं है। सब कुछ संभव है।

ऐसा बोलती हुई सुर सुन्दरी अमरकुमार से आकर लिपट गई। स्वामी! प्राणनाथ, अब कभी ऐसी परीक्षा मत लेना। दोनों एक दूसरे से मिलकर बहुत रोये। अमरकुमार ने सुर सुन्दरी से बार–बार क्षमा माँगी, अपने हाथ से उसके आँसू पोंछे, मुझे क्षमा कर दो प्रिये ! मैंने बहुत रुलाया है। बहुत कष्ट दिया है।

राजा अमरकुमार और सुर सुन्दरी

सुर सुन्दरी बोली– स्वामी ! आपकी आज्ञानुसार सात कौड़ियों में मैंने ये राज्य प्राप्त कर लिया है। ये राज्य आपको अर्पित है। आज से आप इस राज्य के राजा हैं।

बेनाट द्वीप का राजा गुणपाल था। सुर सुन्दरी ने उसे भी सारी बात बताई तब उसने अपनी कन्या गुणसुंदरी का विवाह पहले विमलवाहन से किया था। पुनः उसका विवाह अमरकुमार के साथ किया। अमरकुमार कुछ समय बेनाट द्वीप में अपनी दोनों रानियों के साथ में सुख से रहा।

एक दिन अमरकुमार ने कहा– अब तो 12 वर्ष से भी ऊपर हो गया है। मैंने यहाँ आते समय पिताजी और माँ से कहा था। मैं 12 वर्ष में आ जाऊँगा। अब हमें चंपापुर जाना चाहिये। उसने अपने मन की बात महाराज गुणपाल को और दोनों पत्नियों को बताई। महाराज गुणपाल ने बहुत सारा दहेज देकर दोनों बेटियों को बड़े ही धूमधाम से चंपापुर के लिये विदा कर दिया।

चंपापुर में आकर अमरकुमार दोनों पत्नियों के साथ बहुत समय तक सुखों का अनुभव करते रहे। गृहस्थ धर्म का दोनों पत्नियों के साथ पालन करते रहे। मुनियों को आहार देना, प्रभु की पूजा अर्चना करना। धर्म पुरुषार्थ करने के लिये वे लोग हरदम तत्पर रहने लगे।

एक दिन चंपापुर में एक मुनिराज का आगमन हुआ। उनसे धर्म का उपदेश सुनकर उन तीनों भव्यात्माओं को वैराग्य आ गया। उन्हीं मुनिराज के चरणों में अमरकुमार ने मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली।

अमरकुमार मुनिराज

सुर सुन्दरी ने भी आर्यिका दीक्षा ले ली कठिन तपश्चरण करने लगी। अंत में समाधिमरण करके 16वें स्वर्ग में देवेन्द्र का पद प्राप्त कर लिया। स्त्री पर्याय का छेदन कर दिया। आगे निश्चित ही परम पद को प्राप्त करेगी।

सुर सुन्दरी केशलोच करती हुई

आर्यिका माताजी साधनारत

एक स्त्री जो चाहे वह कर सकती है। सुर सुन्दरी का जीवन हर नारी के लिये एक चुनौती है। वह राजकुमारी थी। सेठ के घर की बहू बनी पति के साथ जंगल में गई। पति ने अकेला छोड़ दिया। भूखी–प्यासी संघर्ष करती रही, दो बार समुद्र में गिरकर भी जिंदा बच गई। मछली के पेट में जाकर भी जीवित बची और उतार–चढ़ाव झेलती हुई। बचपन में गुस्से में कहीं बात को पूर्ण करके दिखाया। सात कौड़ियों में राज्य प्राप्त करके अंत में मोक्ष के राज्य को प्राप्त करेगी। ऐसी आर्यिका माता सुर सुन्दरी को भक्ति से बारम्बार प्रणाम वंदामी।

॥ इति मंगलम् ॥